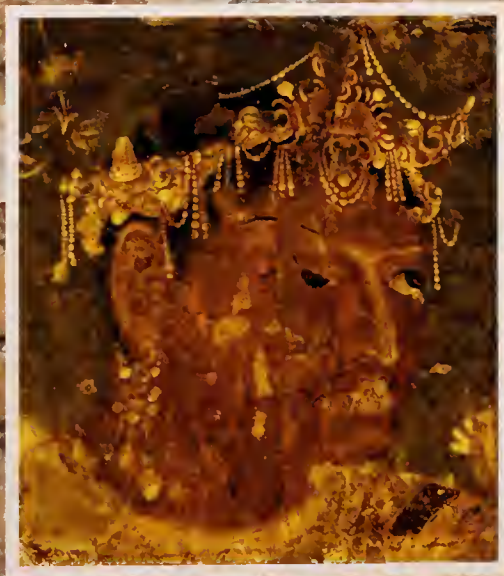
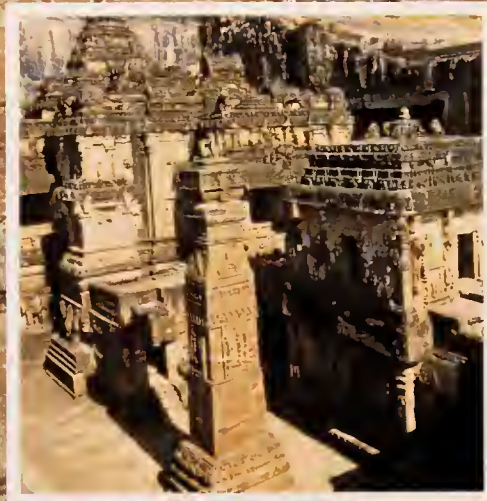




विश्व सांस्कृतिक सम्पदा-भारत 3

अजन्ता की गुफाएं
एलोरा की गुफाएं
ऐलीफैंटा की गुफाएं
चर्च एवं कॉन्वेंट, गोवा

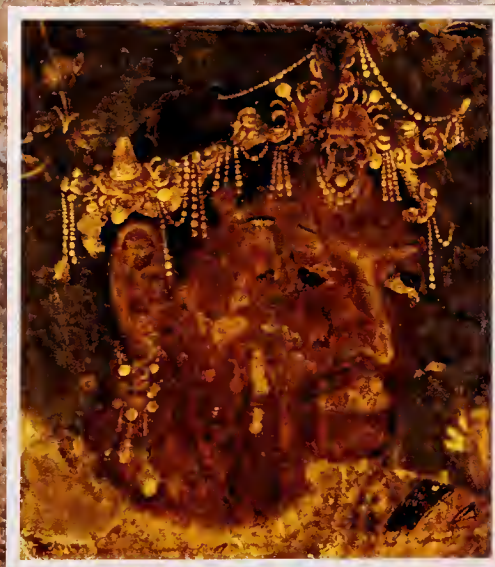
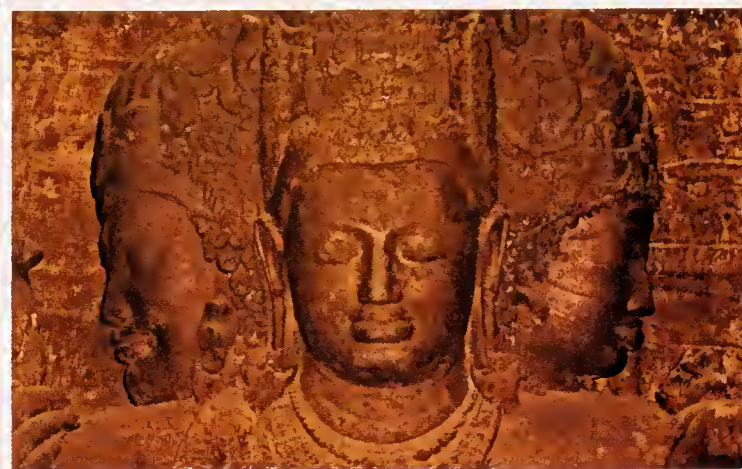


Ajanta Caves
Ellora Caves
Elephanta Caves
Churches and Convents, Goa

WORLD CULTURAL HERITAGE SITES - INDIA 3


विश्व सांस्कृतिक सम्पदा-भारत 3

अजन्ता की गुफाएं
एलोरा की गुफाएं
ऐलीफेंटा की गुफाएं
चर्च एवं कॉन्वेंट, गोवा



Ajanta Caves
Ellora Caves
Elephanta Caves
Churches and Convents, Goa

WORLD CULTURAL HERITAGE SITES - INDIA 3



Digitized by the Internet Archive
in 2018 with funding from
Public.Resource.Org

<https://archive.org/details/worldculturalher300cent>

विश्व सांस्कृतिक सम्पदा-भारत

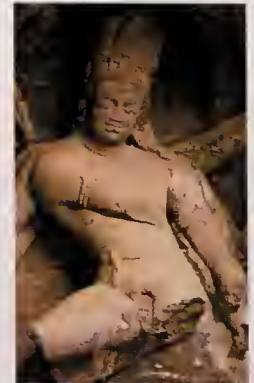
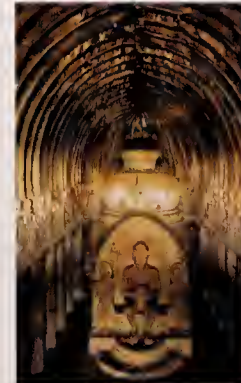
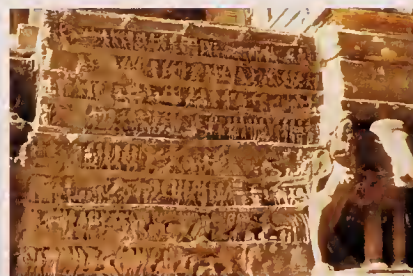
1972 में यूनेस्को की आम सभा ने “विश्व की प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक धरोहर की सुरक्षा” से संबंधित सभा पारित की। इस सभा का उद्देश्य विश्व की प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक धरोहर की सुरक्षा हेतु विश्व के विभिन्न देशों एवं उनके निवासियों में परस्पर सहयोग को बढ़ावा देना था, ताकि वे इस दिशा में अपना योगदान दे सकें। बहुत से देशों ने इस सभा को समर्थन देकर अपने-अपने देश की सीमाओं में स्थित विशिष्ट सार्वभौमिक महत्व के स्थानों एवं स्मारकों का संरक्षण करने की शपथ ली। सभा ने इस दिशा में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग का रचना-विधान तथा विश्व धरोहर-समिति गठित की।

इस सभा की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि यह भी थी कि इसने विश्व-धरोहर-कोष स्थापित किया, जिससे कि विश्व धरोहर में सूचीबद्ध प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक स्थानों के संरक्षण के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहायता ली जा सके। इस कोष में विभिन्न स्रोतों से आर्थिक सहायता मिलती रहती है, जिसे संरक्षण की योजनाओं पर, स्मारकों तथा स्थानों को यथावत् बनाए रखने के कार्यों पर खर्च किया जाता है।

विश्व धरोहर समिति की वर्ष में एक बैठक होती है तथा इसके मुख्य दो कार्य हैं-

- विश्व-धरोहर को पहचानना, अर्थात् उन प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक स्थानों का चुनाव करना, जो इसके अंग होंगे। इकोमोस (इंटरनेशनल काउन्सिल ऑफ मोन्यूमेंट्स ऐण्ड साइट्स) तथा इयूकन (इंटरनेशनल यूनियन फॉर द कंजर्वेशन ऑफ नेचर ऐण्ड नेचुरल रिसोर्सेज) विभिन्न देशों के प्रस्तावों की जांच-पड़ताल कर उनकी मूल्यांकन रिपोर्ट बना कर समिति के कार्यों में सहायता करती है।
- विश्व-धरोहर-कोष को चलाने एवं विभिन्न देशों द्वारा मांगी गई तकनीकी एवं वित्तीय सहायता का निर्धारण करना।

यूनेस्को द्वारा भारत में चुने गए विश्व धरोहर स्थान इस प्रकार हैं-अजंता की गुफाएं; एलोरा की गुफाएं; आगरा का किला; ताज महल, आगरा; सूर्य मंदिर, कोणार्क; महाबलीपुरम स्मारक-समूह; चर्च एवं कॉन्वेन्ट्स, गोआ; खजुराहो स्मारक समूह; हम्पी के स्मारक; फतेहपुर सीकरी-मुगलकालीन शहर; पट्टदकल स्मारक समूह; एलिफेंटा की गुफाएं; वृहदेश्वर मंदिर, तंजावूर, स्तूप, साँची; कुतुब स्मारक समूह तथा हुमायूँ का मकबरा, दिल्ली।



World Cultural Heritage Sites-India

The General Council of UNESCO in 1972 adopted the “Convention concerning the Protection of the World Natural and Cultural Heritage”. The aim of the Convention was to promote cooperation among all nations and people in order to contribute effectively to the protection of the natural and cultural heritage which belongs to all mankind. A large group of nations ratified the Convention and pledged to conserve the sites and monuments within its borders which have been recognised as having an exceptional universal value. To this end, the Convention established a mechanism of international cooperation and set up a World Heritage Committee.

Another important achievement of the Convention was the creation of the World Heritage Fund which allows it to call upon international support for the conservation of the natural and cultural sites listed as the World Heritage. The World Heritage Fund receives incomes from different sources which are used to finance conservation projects and upkeep of the monuments and sites.

The World Heritage Committee, which meets once a year, has two important tasks :

- to define the World Heritage, that is, to select the cultural and natural wonders that are to form part of it. The Committee is helped in this task by ICOMOS (International Council of Monuments and Sites) and IUCN (International Union for the Conservation of Nature and Natural Resources) which carefully examine the proposals of the different countries and draw up an evaluation report on each of them.
- to administer the “World Heritage Fund” and to determine the technical and financial aid to be allocated to the countries which have requested for it.

The World Heritage Sites selected by UNESCO in India are: Ajanta Caves; Ellora Caves; Agra Fort; Taj Mahal, Agra; The Sun Temple, Konarak; Mahabalipuram Group of Monuments; Churches and Convents, Goa; Khajuraho Group of Monuments; Hampi Monuments; Fatehpur Sikri-Mughal City; Group of Monuments at Pattadakal; Elephanta Caves; Brihadesvara Temple, Thanjavur, Stupas, Sanchi; Qutub Complex and Humayun's Tomb, Delhi.

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र, नई दिल्ली का हमेशा यह प्रयास रहा है कि वह लोगों को “भारतीय संस्कृति” के बारे में शिक्षित करने के लिए मनमोहक व जानकारी देने वाली पठनीय सामग्री उपलब्ध कराए। ऐसी प्रकाशित सामग्री देश भर के उन स्कूलों में वितरित की जाती है, जहाँ के अध्यापकों को केन्द्र ने प्रशिक्षण दिया है। इनका उपयोग विभिन्न शैक्षणिक स्थितियों में भारतीय कलात्मक अनुभूति के अन्तः संबंध को समझने के लिए किया जाता है। इनका उद्देश्य देश की युवा शक्ति को भारतीय कला एवं संस्कृति में निहित दर्शनशास्त्र एवं सौंदर्य के प्रति संवेदनशील बनाना है।

प्रायः छात्रों को संग्रहालयों एवं ऐतिहासिक स्मारकों की शैक्षणिक यात्रा पर जाकर प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करने का अवसर नहीं मिलता। ऐसी स्थिति में सांस्कृतिक केन्द्र इस पठनीय सामग्री के द्वारा स्कूल की चारदीवारी के अंदर ही छात्रों को भारतीय विचारधारा तथा कला के वैभव व सौंदर्य का साक्षात् परिचय करवाता है।

केन्द्र द्वारा तैयार की गई दृश्य एवं श्रव्य सामग्री के अतिरिक्त इसकी मुद्रित सामग्री की भी देश भर के अध्यापकों ने काफी प्रशंसा की है। अपने बीच लोकप्रिय इस मुद्रित सामग्री की सहायता से वे छात्रों में हमारी प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक संपदा के संरक्षण के प्रति उत्तरदायित्व की भावना उत्पन्न करते हैं।

भारत में विश्व धरोहर सप्ताह मनाने के लिए सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र देश में स्थित विश्व धरोहर के 16 स्थानों पर चार सांस्कृतिक पैकेज भेंट कर रहा है। इनमें से हर पैकेज में 24 रंगीन चित्र हैं। हर चित्र के पीछे उसकी व्यापक जानकारी है। इनके साथ एक पुस्तिका भी है, जिसमें छात्रों एवं अध्यापकों की जानकारी के लिए हर स्मारक का वर्णन तथा संबंधित गतिविधियों का उल्लेख है। यद्यपि इन पैकेजों के 96 रंगीन चित्र इन स्थानों की भव्यता को साकार करने में पूरी तरह सक्षम तो नहीं होंगे, फिर भी एक सीमा तक पुस्तिका छात्रों एवं अध्यापकों को अपनी सांस्कृतिक धरोहर के बारे में ज्यादा से ज्यादा जानकारी दे सकेगी।

स्कूल चाहें तो दल या क्लब बनाकर या फिर अन्य स्वैच्छिक संस्थाओं के साथ मिलकर महत्वपूर्ण स्थानों के बारे में व्यापक खोजबीन कर सकते हैं तथा छात्रों को संरक्षण के आसान तरीके सिखा सकते हैं।

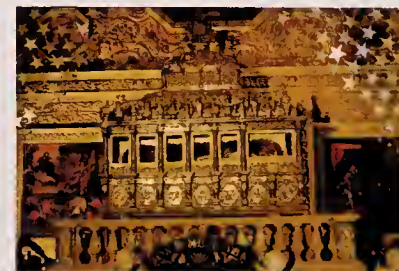
सारे देश में फैले हजारों से ज्यादा पुरातन स्मारकों में से कुछ का संरक्षण भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग, कुछ स्वैच्छिक संस्थाएं, धर्मार्थ न्यास तथा कुछ व्यक्ति कर रहे हैं। यह एक बहुत गर्व की बात है कि यूनेस्को ने भारत के 16 स्मारकों को चुनकर विश्व की धरोहर-सूची में शामिल किया है। यद्यपि देश के बहुसंख्यक स्मारकों को देखते हुए यह संख्या काफी छोटी है, फिर भी इससे उस काल के कलाकारों एवं वास्तुविदों का सम्मान बढ़ा है जिन्होंने 2000 वर्षों की लंबी अवधि में इन स्मारकों को साकार किया था।

The Centre for Cultural Resources and Training (CCRT)'s endeavour has been to produce informative and attractive educational material to teach about Indian Culture. These materials are distributed to schools in all parts of the country from where teachers have been trained by the CCRT. They are used in a variety of teaching situations to create an understanding of the inter-disciplinary approach in Indian artistic manifestations. They aim at sensitising the youth to the philosophy and aesthetics inherent in Indian art and culture. Students do not always get a chance to visit museums and historical monuments to get a first-hand experience of learning about our cultural heritage; hence, the materials of the CCRT bring to the students, in the confinement of the four walls of the classroom, the splendour and beauty in Indian thought and art.

Apart from other audio-visual materials prepared by the CCRT its Folios and Cultural Packages have received wide acclaim and are very popular with teachers in all parts of the country, who are using them to create amongst students a sense of responsibility for conservation of all that is beautiful in our natural and cultural heritage.

To celebrate the World Heritage Week in India the CCRT is presenting four Cultural Packages on the 16 World Heritage Sites in India. These packages contain about 24 pictures each with detailed descriptions of each picture alongwith a booklet giving information about each monument and related activities for students and teachers. The 96 pictures contained in these packages are not adequate to recreate the splendour of these sites. However, within the given constraints, it is hoped that inspired by the activities provided in the booklet, teachers and students will collect more information about their cultural heritage and interweave it into the curriculum subjects that they teach and learn. Schools can also form groups, clubs and work with other voluntary organisations to systematically take up the work of conducting detailed studies of the sites and encourage the youth to learn simple conservation techniques.

Of the thousands of ancient monuments strewn all over the countryside in India, some are protected by the Archaeological Survey of India, a few by voluntary organizations and endowment trusts and some by members of the community at large. It is a matter of great pride that UNESCO has selected 16 monuments of India and placed them on the World Heritage list. Though this number is small in comparison to the large number of monuments in the country, it brings prestige to the artists and architects of India of that bygone era, who made these monuments in a period covering a span of 2000 years.



WORLD CULTURAL HERITAGE SITES – INDIA



Cartographic Designs, New Delhi

Not to Scale

● World Cultural Heritage Sites —India 1

Sanchi Stupas, Agra Fort;
Fatehpur Sikri; Taj Mahal, Agra

■ World Cultural Heritage Sites —India 2

Sun Temple, Konarak; Khajuraho Temples;
Qutub Complex, Humayun's Tomb, Delhi

▲ World Cultural Heritage Sites —India 3

Ajanta Caves; Ellora Caves; Elephanta Caves;
Churches and Convents, Goa

◆ World Cultural Heritage Sites —India 4

Mahabalipuram Monuments; Brihadesvara Temple,
Thanjavur; Pattadakal Temples; Hampi Monuments

अजंता

महाराष्ट्र राज्य के औरंगाबाद जिले में वघोरा नदी के ऊपर चट्टानों को तराश कर बनाई गई अजंता की गुफाएं वास्तुकला, मूर्तिकला एवं चित्रकला के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धियां हैं। भारतीय कला एवं संस्कृति में इनका अनूठा स्थान है।

अजंता के इन गुफा मंदिरों का यह स्थान उस व्यापारिक मार्ग से अधिक दूर नहीं था, जो अरब सागर के माध्यम से चीन से जुड़ा था। यही कारण था कि उस काल के व्यापारी, यात्री तथा भिक्षु सुचारु रूप से बौद्ध धर्माधिकारियों से विचारों तथा ज्ञान का विनिमय करते रहते थे। इस प्रकार यह स्थान एकांत में तो था, पर पूर्णतः एकाकी नहीं था। इसी विशेषता के कारण यह स्थान बौद्ध धर्म में आस्था रखने वाले लोगों के ध्यानाभ्यास के लिए सर्वथा उपयुक्त था।

अजंता की गुफाएं दो विशिष्ट चरणों से संबंधित हैं तथा इन दोनों चरणों में लगभग पांच सौ वर्षों का अंतराल है। इन तीस गुफाओं में से गुफा क्रमांक 9, 10, 19, 26 तथा 29 चैत्य गृह (उपासना स्थल) हैं तथा शेष संघ-आश्रम अर्थात् विहार (मठ) हैं। गुफाओं का प्रारंभिक समूह ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी से दूसरी ईस्वी शताब्दी के काल का है। पांचवीं शताब्दी के मध्य में वास्तु निर्माण के दूसरे चरण का कार्य हुआ था।

वाकाटक शासकों के प्रश्रय में यहां कलाकारों ने चट्टानों पर चैत्य-गृह तथा विहार उत्कीर्ण कर अद्भुत आश्चर्यों को साक्षात् किया तथा फिर सर्वोत्तम आकृतियों से अलंकृत किया। इन्हीं के साथ चित्रकारों ने भी अपनी कुशल कूचियों व स्थानीय रूप से उपलब्ध रंगों की सहायता से गुफाओं की दीवारों तथा छतों को अभूतपूर्व ढंग से चित्रित कर उन्हें भारतीय भित्तिचित्र कला के सर्वोत्तम रूप का भंडार बना दिया। चीनी यात्री ह्यान सांग यहाँ पर इन कलाकारों के बौद्ध-भवनों का विस्तृत एवं सुन्दर वर्णन छोड़ गये हैं। यद्यपि इन भित्ति चित्रों को अनेक चित्रकारों ने एक साथ मिल कर साकार किया था, मगर देखने पर वे एक कलाकार की कृति का आभास देते हैं। गुफा क्रमांक 1, 2, 16 तथा 17 में संरक्षित सुंदरतम भित्ति चित्र हैं। इन भित्ति चित्रों का सौंदर्य, भावों का कुशल चित्रण, आकर्षक रंग योजना तथा संतुलित संयोजना दर्शकों को सम्मोहित सा कर देती हैं।

जातक कथाओं को दर्शाने वाली धार्मिक आकृतियां समकालीन वास्तुकला तथा मानवीय व वन्य जीवन का परिचय देती है।

अजंता की गुफाओं को देखने के लिए वर्षा ऋतु के तुरंत बाद जाना चाहिए ताकि घाटी की प्राकृतिक सुंदरता का भी आनंद लिया जा सके। इसी समय यहाँ का झरना भी रमणीय दृश्य उत्पन्न करता है। आज भी यहां विभिन्न जातियों के वृक्ष तथा सघन वनस्पति अपनी हरियाली तथा रंग-बिरंगे फूलों से इस क्षेत्र के सौंदर्य को द्विगुणित कर देते हैं। यह सौंदर्यभरा शांत वातावरण, दर्शकों में कलात्मक भावों के साथ-साथ आध्यात्मिक विचारों को पैदा करता है।

आज अजंता की गुफाएं तथा उनकी अभूतपूर्व कला उनके निर्माता कलाकारों को श्रद्धांजलि अर्पित करती सी प्रतीत होती है।

सन् 1819 में जॉन स्मिथ ने इन गुफाओं को पुनः खोजा था।

Ajanta

The rock cut caves at Ajanta in Aurangabad district of Maharashtra state cut into the curved mountain wall above the Waghora river are major achievements of architecture, sculpture and paintings and occupy a unique place in Indian art and culture. The cave site at Ajanta was not very far from a trade route which linked the Arabian Sea to China. Here, traders, travellers and ascetics mingled and held discussions on all aspects of life. The cave site was secluded but not isolated and the place was ideally suited to the needs of meditating monks of the Buddhist faith.

The thirty caves at Ajanta belong to two distinct phases separated by nearly five centuries. Of these caves, five (Nos. 9, 10, 19, 26 and 29) are *chaitya-grihas* (sanctuary) and the rest *sanghramas* or *viharas* (monastery). The earliest group date back from the second century B.C. to the second century A.D. The second phase of architectural activity was carried out towards the middle of the fifth century A.D. Here, the sculptors, under the patronage of the Vakatakas wrought wonders on the rocks by carving the *chaitya-grihas* and *sanghramas* and decorated them with masterpiece of sculptural art, whereas the *chitrakaras* with their facile brush and variety of colours, which were mostly locally available, transformed the walls and ceilings of these caves into a repository of Indian mural art.

The Chinese traveller, Hieun Tsang has left for us a graphic description of the Buddhist establishment here. Cave numbers 1, 2, 16 and 17 have the best preserved paintings. The charm and the beauty of these paintings captivate the onlooker with their richness of beauty, superb expressiveness, beautiful colours and balanced compositions. The themes, though basically religious in content depict *jataka* stories and also reflect contemporary secular subjects, showing human and animal life.

The caves at Ajanta must be visited immediately after the rains to appreciate the beauty of the valley. After the rains the waterfall presents a glorious spectacle. Even today the rich variety of trees, plants and shrubs with their magnificent foliage and flowers add to the beauty of the landscape.

Very rightly, this cave site of Ajanta and the marvels it contains are considered a tribute to the piety, vision and sheer determination of the artists who created them.

These caves were “rediscovered” in 1819 A.D. by John Smith.



एलोरा

एलोरा, महाराष्ट्र राज्य के औरंगाबाद जिले में स्थित है। यहां, दक्कन की पहाड़ियों में आश्चर्यजनक गुफाओं की लगभग दो किलोमीटर तक फैली एक लंबी कतार है। एलोरा के इन गुफा-मंदिरों को तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है। पहली श्रेणी में बौद्ध गुफाएं, दूसरी में हिंदू तथा तीसरी में जैन गुफाएं आती हैं।

इन गुफा मंदिरों की संख्या 34 हैं तथा सुविधा के लिए इन्हें क्रमांक दे दिए गए हैं। गुफा क्रमांक 1-12 तक बौद्ध गुफाएं हैं। ये बौद्ध धर्म के महायान पक्ष से संबंध रखती हैं। यह एक आम धारणा है कि सर्वप्रथम बौद्ध धर्मावलंबी यहां सातवीं शताब्दी के प्रारंभ में आए थे। हिंदू श्रेणी की गुफाएं क्रमांक संख्या 13 से 29 तक हैं। बौद्ध गुफाओं के निर्माण के आखिरी चरण के काल में प्रथम हिंदू गुफा मंदिर निर्मित हुए थे। इसके पश्चात् राष्ट्रकूट राजाओं के प्रश्रय में हिन्दु गुफाएं तथा पांच जैन गुफाएं (क्रमांक 30-34) निर्मित हुईं।

राष्ट्रकूट वंश का शासन नासिक के आसपास उत्तरी दक्कन पर था। उनकी राजधानी मलखेड, एक सुंदर एवं समृद्ध नगरी थी। पूरे दक्कन पर अपने शासन के विस्तार के उद्देश्य से वे पल्लव वंश तथा चालुक्य वंश के राजाओं से युद्ध करते रहे थे। राष्ट्रकूट वंश के राजाओं के शासन काल के दौरान एलोरा का प्रसिद्ध कैलाशनाथ मंदिर उत्कीर्ण किया गया था। यद्यपि केवल यही राष्ट्रकूट वंश का अकेला स्मारक नहीं है, फिर भी यह सर्वाधिक भव्य है। राष्ट्रकूट वंश के राजाओं ने चालुक्य वंश से राजनैतिक संबंध स्थापित कर पल्लवों को पराजित किया। तमिलनाडु के कांचीपुरम् में स्थित कैलाशनाथ मंदिर की नकल पर न केवल चालुक्य वंश की राजधानी, आधुनिक कर्नाटक राज्य के, पट्टदकल में विरुपाक्ष मंदिर निर्मित हुआ, बल्कि राष्ट्रकूट राजाओं ने भी एलोरा में उसका अनुकरण किया। एलोरा में यह मंदिर गुफा क्रमांक 16 के नाम से प्रसिद्ध है।

इसी के साथ-साथ रामेश्वर मंदिर, अर्थात् गुफा क्रमांक 21 को भी देखना चाहिए, क्योंकि इसका मूर्ति शिल्प भी अत्यंत सुन्दर है। यह गुफा मंदिर एलोरा के हिंदू गुफा मंदिरों से पहले के मंदिरों में माना जाता है। गुफा क्रमांक 29 के बारे में यह माना जाता है कि उस पर मुंबई की समीपवर्ती एलिफेंटा गुफाओं का प्रभाव है।

गुफा क्रमांक 30 से 34 तक की जैन गुफाएं पहाड़ी के उत्तरी भाग पर हैं तथा संभवतः ये 880 ईस्वी में निर्मित हुई थीं। ये गुफाएं तीर्थंकर तथा महावीर जैन के मूर्ति शिल्पों से अलंकृत हैं। महावीर जैन अपने सिंहासन पर बैठे हैं। गुफा क्रमांक 30, जिसे छोटा कैलाशनाथ भी कहा जाता है, भी सूक्ष्म रूप से किए गए उत्कीर्ण कार्यों तथा चमकीलेपन के कारण प्रसिद्ध है।

यद्यपि एलोरा के अधिकांश भित्ति चित्र लगभग नष्ट हो गए हैं, पर जितने भी शेष बचे हैं, वे इस क्षेत्र में राष्ट्रकूट वंश के काल की चित्रकला के उदाहरण होने के कारण अधिक महत्वपूर्ण हैं।



Ellora

Ellora is situated in Aurangabad district of Maharashtra state. It has a very interesting series of cave temples which extends about two kilometres in the scrap of a hill. The rock-cut architecture of Ellora can be divided into three groups. The first group of caves are Buddhist, the second Hindu and the last Jain.

In all there are 34 caves which have been numbered for the sake of convenience. Cave No. 1 to 12 are Buddhist and all the Buddhist caves belong to the Mahayana phase of the religion. It is commonly believed that the Buddhist first came to Ellora in the early seventh century. The second group of caves extending from Cave No. 13 to 29 depict scenes from Hindu mythology. The time period of the execution overlaps with the later phase of Buddhist caves. Under the patronage of Rashtrakuta kings, the Hindu caves and five caves of the Jains (from No. 30-34) were built.

The Rashtrakutas ruled in the Northern Deccan region around Nasik. Their capital at Malkhed was a beautiful and prosperous city. In order to extend their kingdom throughout the Deccan, the Rashtrakutas had been fighting with the Pallavas and Chalukyas. It was during the reign of the Rashtrakutas that the world famous Kailasanath temple was carved out of the hill side at Ellora. Although the Kailasanath temple is not the only monument of the Rashtrakuta dynasty, it is certainly the most impressive. The Rashtrakutas also established their political contact with the Chalukyas and defeated the Pallavas. The design of the Kailasanath temple at Kanchipuram in Tamil Nadu was copied in the Chalukyan capital at Pattadakal in Karnataka and later by the Rashtrakutas in Ellora. Cave No. 21, also known as Rameshwara cave, must be visited for its beautiful sculptural wealth. It is also considered to be one of the first Hindu caves at the site. Cave No. 29. Dhumar Lena is said to be influenced by the pattern of the caves at Elephanta island near Bombay.

The Jain group of Caves No. 30 to 34, on the northern projection of the hill, were started around 880 A.D. These caves are decorated with sculptures of Tirthankaras and Mahavira Jain on his Lion throne. Cave No. 30 also known as Chhota Kailasa has richly carved details and a polished finish.

Most of the paintings at Ellora are nearly destroyed but whatever is left are important for they are the only examples of what was executed here during the period of the Rashtrakutas.



एलिफेंटा

एलिफेंटा द्वीप मुंबई स्थित गेटवे ऑफ इंडिया की उत्तर-पूर्वी दिशा में वहां से लगभग 10 किलोमीटर दूर स्थित है। मुंबई बंदरगाह की जल-सीमा इसे छूती है। इस द्वीप में दो पहाड़ियाँ हैं तथा उनके बीच घाटी भी है। इसका कुल व्यास लगभग 7 किलोमीटर है। धरातलीय क्षेत्र 4 से 6 वर्ग किलोमीटर है।

पुर्तगाली सर्वप्रथम इस द्वीप के जिस भाग पर उतरे थे, वहां हाथी की पाषाण निर्मित एक विशाल आकृति थी। अतः उस आकृति को देख, उन्होंने इस द्वीप का एलिफेंटा नामकरण किया था। वैसे, स्थानीय निवासी एवं मुंबई के मछुवारे इसे ‘घारापुरी’ नाम से जानते हैं।

इस द्वीप के प्राचीन इतिहास का वैसे तो पता नहीं चल सका है, लेकिन ‘ऐहोले शिलालेख’ नाम से प्रसिद्ध ऐहोले में प्राप्त एक शिलालेख इस तथ्य की सत्यापना करता है कि भारत के पश्चिमी तट पर मौर्य वंश का शासन था। इससे यह भी ज्ञात होता है कि चालुक्य वंश के कुशल शासक पुलकेशिन (द्वितीय) ने यहां पर मौर्यों को हराया था। चालुक्य काल से अठाहरवीं शताब्दी तक इस द्वीप का इतिहास उत्थान और पतन की कहानियों से भरा हुआ है। सन् 1534 में पुर्तगालियों ने मुस्लिम शासकों से इसे अपने आधिपत्य में लिया था। तत्पश्चात् अंग्रेजों ने दिसंबर, 1774 में इस पर अधिकार कर लिया एवं इस द्वीप का सैनिक अड्डे के रूप में भी प्रयोग किया।

पुर्तगालियों ने उस शिलालेख को हटा दिया था अन्यथा उससे इस द्वीप के इतिहास पर प्रकाश पड़ता। यह शिलालेख अभी तक भी नहीं खोजा जा सका है।

यह एक आम धारणा है कि छठी शताब्दी में कालाचुरी काल के प्रारंभ में इन गुफाओं का निर्माण हुआ है।

एलिफेंटा में वैसे तो अनेक गुफाएं हैं, पर गुफा क्रमांक 1 सबसे भव्य तथा महत्वपूर्ण है। यहाँ दूरी तक फैली सीढ़ियों के जरिए पहुँचा जा सकता है। समुद्र को पार करने, पर्वत पर चढ़ने, गुफा में प्रवेश तथा अनुष्ठान भगवान शिव की उपस्थिति की पवित्र भावना को जागृत करते हैं। इस गुफा में भगवान शिव को उनके तीन रूपों में दर्शाने वाली मूर्ति उत्कीर्ण है।

गुफा का आंतरिक भाग स्तंभों द्वारा गलियारों में विभक्त है। साथ ही आंतरिक भाग कहीं ऊँचा तो कहीं नीचा है। पश्चिमी प्रवेशद्वार के समीप एक वर्गाकार पूजा-स्थल है। पूजा-स्थल में एकाग्र ‘लिंग’ स्थापित है। शिवरात्रि के अवसर पर आज भी सैकड़ों लोग यहाँ पूजा-अर्चना के लिए आते हैं।

एलिफेंटा की गुफाओं में भगवान शिव से जुड़ी कथाओं एवं मिथकों को बड़े ही प्रभावकारी ढंग से दर्शाया गया है।

एलिफेंटा द्वीप आम, इमली तथा करौंदे के पेड़-पौधों से आच्छादित है। यत्र-तत्र ताड़ के वृक्ष भी दृष्टिगोचर होते हैं। द्वीप की आबादी उंगलियों पर गिनी जा सकती है। यहां रहने वाले लोग चावल की खेती करते हैं तथा मुंबई के बाजारों में बेचने के लिए भेड़ तथा मुर्गीपालन करते हैं।

नाव या मोटरबोट के जरिए इस द्वीप पर पहुँचा जा सकता है। ये गेटवे ऑफ इंडिया से चलती है तथा एक घंटे में द्वीप पर पहुँचा देती हैं।

Elephanta

The island of Elephanta within the waters of Bombay Harbour is situated about seven miles north-east of the Gateway of India, Bombay. It consists of two hills, separated by a valley and measures about 7 kilometres in circumference. The surface area varies from 4 to 6 square miles.

The name of Elephanta was given to this island by the Portuguese after they discovered a colossal stone statue of an elephant where they landed. The island is known to the local people including the boatmen of Bombay, as ‘Gharapuri’.

The early history of the island is not known but an inscription found in Aihole, generally referred to as ‘the Aihole inscription’ throws some light by reconfirming the fact that Mauryans were ruling the west coast of India. It also records that Pulakesin II, the successful Chalukyan ruler defeated the Mauryans there. From the period of the Chalukyan dynasty, the island has had a chequered history. The Portuguese took control of the island from the Muslim rulers in 1534 A.D. Finally, the Britishers occupied it in December 1774 A.D. and also used the island as their military base.

The Portuguese had removed a stone inscription which could have thrown some light on its history. This inscription is lost now.

It is commonly believed that the caves of Elephanta were carved during the early Kalachuri period in the 6th century A.D.

There are a number of caves at Elephanta but the principal and most imposing one is Cave I. It is approached by a long flight of steps. All the details such as crossing the river, climbing a mountain, entry into a cave, rituals within the interior space, are directed towards invoking the divine presence of Siva. The most magnificent sculpture at the site shows Siva in his three-fold manifestation. Inside the cave, the space is divided into a number of aisles by columns. There is a variation in height inside the cave and towards and west entrance, there is a square sanctuary. This sanctuary enshrines a monolithic linga and on the ‘Sivaratri’ festival, hundreds of people still come here to offer prayers.

In Elephanta the stories and myths related to Siva are depicted most powerfully.

The island of Elephanta is full of mango, tamarind, karanda and other plants. One finds, palm trees are also planted here and there. Very few people inhabit the island, they cultivate rice and rear sheep or poultry for sale in the Bombay market.

The most convenient transport for visiting the Elephanta caves is by a ferry boat which starts from near the Gateway of India at Bombay and takes an hour to reach the island.



गोआ

गोआ देश के पश्चिमी तट पर स्थित है। इसके सुंदर तथा मनोहर समुद्री तट एवं प्राकृतिक सुपमा बहुत बड़ी मात्रा में पर्यटकों को आकर्षित करती है। गोआ को विरासत में अत्यंत समृद्ध लोकनृत्य, लोकगीत एवं लोकसंगीत मिला है। विभिन्न कालों में जो लोग यहां रहे थे, उन्होंने भी इन्हें काफी प्रभावित किया था।

गोमत के नाम से पहचाने जाने वाले इस क्षेत्र का नामकरण पुर्तगालियों ने गोआ किया था। जुआरी नदी के मुहाने पर स्थित इस नगर को गोवा, गोवापुरी या गोपाकपत्तन के नाम से भी जाना जाता था। इस क्षेत्र का लिपिबद्ध इतिहास बताता है कि प्रारंभ में यहां भोजवंश का शासन था। उन्होंने मौर्यों के अधीन रहकर शासन किया।

लगभग सोलह सौ वर्षों, ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी से लेकर तेरहवीं शताब्दी, तक यह क्षेत्र हिंदू राजाओं के अधिकार में रहा। तेरहवीं शताब्दी के आखिरी दशक में इस पर इस्लामी प्रभुत्व स्थापित हो गया था। सन् 1330 में विजयनगर साम्राज्य के एक शूरवीर सेनापति ने इस क्षेत्र को अपने साम्राज्य में मिला लिया था। सन् 1472 में यह क्षेत्र पुनः इस्लामी शक्तियों के अधीन हो गया था।

जुआरी नदी के छिछला हो जाने पर इसके बंदरगाह को वहां से हटाकर मांडवी नदी पर पुनर्स्थापित किया गया था।

यह क्षेत्र एक पारंपरिक महत्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्र था। इसी कारण विश्व के अनेक राष्ट्रों के जलयान यहां आते रहते थे। पुर्तगालियों ने सन् 1510 में इस क्षेत्र को अपने अधिकार में लेने के पश्चात् इसे अपने समुद्री-साम्राज्य की राजधानी बनाया था। उन्होंने क्रमशः इस क्षेत्र के आस पास के क्षेत्र पर भी आधिपत्य जमाया तथा सारी व्यापारिक गतिविधियां इस नगर के माध्यम से पश्चिमी तट पर केंद्रित कीं। गोआ को तब महत्वपूर्ण भंडार-गृह माना जाता था, इसी कारण इसे स्वर्णिम गोआ के रूप में प्रसिद्धि मिली थी।

पुर्तगालियों के यहां आने का उद्देश्य केवल व्यापार ही नहीं था, बल्कि ईसाई धर्म का प्रचार करना भी था।

पुर्तगाली यहां आने वाली प्रथम यूरोपीय शक्ति थी। उनके आगमन से गोआ संस्कृति पर उनके ख्रीस्त धर्म तथा उनके रहन-सहन का काफी प्रभाव पड़ा। उन्होंने वेल्ह गोआ (प्राचीन गोआ) को अपनी राजधानी बनाना प्रारंभ किया। कालांतर में वह “पूर्व का रोम” कही जाने लगी। यहाँ भव्य गिरिजाघर भी निर्मित किए गए।

आज भी वहां मूल पुर्तगाली भावना से वशीभूत लोग यह चाहते हैं कि गोआ पुर्तगाल का प्रतिरूप लगे। यही कारण है कि यूरोपीय कला एवं संस्कृति की यहां न केवल जड़ें जमीं बल्कि वह स्थानीय कला व संस्कृति का अभिन्न रूप बन गई।

क्रिसमस अर्थात् बड़ा दिन तथा उसके पश्चात् तीन सप्ताहों तक आयोजित होने वाले समारोह सारे विश्व के साथ-साथ गोआ में भी बड़े उत्साह से मनाए जाते हैं। इन दिनों चर्च में जाने के समय श्वेत एवं लाल रंगों के परिधान धारण किए जाते हैं। श्वेत वर्ण पवित्रता के साथ-साथ परम शक्ति के साथ एकात्मता का परिचायक है। लाल रंग के परिधान ख्रीस्त के बलिदान के प्रतीक माने जाते हैं।

गोआ प्राकृतिक सौंदर्य एवं सांस्कृतिक संपदा का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है तथा इसका हर कीमत पर संरक्षण किया जाना चाहिए।

Goa

Goa, situated on the western coast of India attracts a number of tourists for its beautiful sea beaches and lush greenery. It is the inheritor of a rich tradition of folklore, songs and dances influenced by the people that have lived here. The Portuguese gave the territory of Goa its name. The region was known as Gomata. The port-town situated at the mouth of the river Zuari was known as Gova, Gowapuri or Gopakapattan. The recorded history of the region begins with the rulers of the Bhoja dynasty who are said to have ruled this area under the Mauryas. The port of Gova and the neighbouring areas remained under the rule of Hindu kings for approximately sixteen hundred years— from about the third century B.C. to the thirteenth century A.D. In the last decade of the thirteenth century, Gova came under the control of Islamic rule. In 1330 A.D., an intrepid general of the Vijayanagar kingdom annexed this territory and from 1472 A.D., it was again taken over by the Islamic rulers.

The port of Goa was moved from the banks of the river Zuari to the mouth of river Mandovi as the former had become shallow with silt.

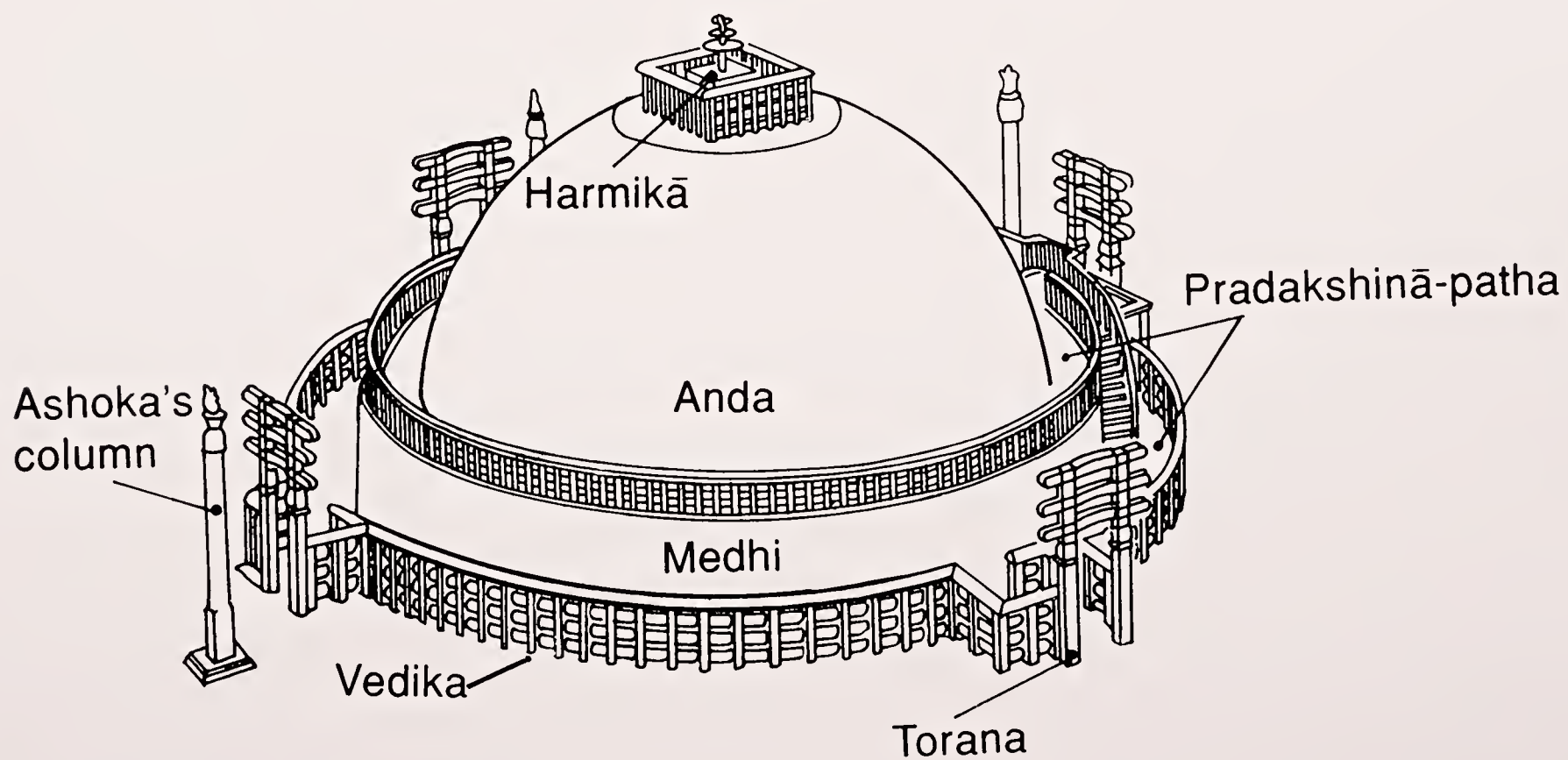
The region was a renowned trading centre. It had an important port, and ships from many parts of the world stopped here. The Portuguese, who conquered Goa in 1510 A.D., made it the trade capital of their empire. Gradually, they took control of the neighbouring areas and managed to channelise most of the trade on the west coast through the city. Goa was considered as an important *entrepot* and earned for itself the title of Goa *Duorada* Golden Goa.

The Portuguese were not only interested in trade but had also come to spread the Christian religion. They were the first European power to come to India. With the coming of the Portuguese rulers, their religion as well as their way of life had a tremendous impact on Goan culture. Soon after they came, the Portuguese set about making the city of Velha Goa (Old Goa), their capital came to be known as “the Rome of the Orient”. Splendid churches were constructed.

Even today, there is an Iberian aura of the old feeling that Goa must have looked like a ‘little Portugal’.

It was thus, that with the Portuguese influence in Goa, the religion and the art of Europe took roots in that soil and became an integral part of our culture and heritage. Christmas and a season of three weeks following it are celebrated in Goa and by Christians all over the world with great enthusiasm and fanfare. In this season, the colours worn in the church are white and red. White symbolises purity and oneness with God and red symbolises Jesus giving up his life for the people and the blood of his sacrifice.

Goa is a fine example of the beauty of the nature and cultural heritage of the region and we must try to conserve this at all cost.



PLAN OF STUPA

तोरण Torana

तोरण मूलतः प्रवेशद्वार होता है। इसके दो ऊर्ध्वाकार स्तंभों पर तीन आड़े प्रस्तरपाद आधारित रहते हैं। इन स्तंभों के बीच से निकल कर श्रद्धालुगण स्तूप में प्रवेश करते हैं। इसके दोनों तरफ वन्य एवं वनस्पति जगत के सजावटी प्रतीक उत्कीर्ण किए जाते हैं। साथ ही भवन-निर्माण की बारीकियां भी होती हैं।

The *Torana* is basically a gateway. It consists of two upright pillars supporting three architraves that makes an entry space through which the devotee gains an access to the *stupa*. Both its sides are carved with the decorative motifs of figures, animals, plant life and architectural details.

हर्मिका Harmika

स्तूप के अंडभाग के शीर्ष की चौकोर रेलिंग (घेरे) को हर्मिका कहते हैं। यह स्तूप के एक महत्वपूर्ण भाग यष्टि को घेरे रहती है।

The square superstructure in the form of a railing on top of the dome of *stupa* is known as *Harmika*. It encloses the pole *Yasti*, an important part of the *stupa*.

प्रदक्षिणा-पथ Pradakshina patha

मंदिर या पूजा स्थल के चारों तरफ बने सामान्य सतह से ऊंचे पथ को प्रदक्षिणा-पथ कहते हैं। श्रद्धालुगण इस पथ पर घड़ी के अनुरूप बाईं दिशा से प्रदक्षिणा प्रारंभ करते हैं।

A path used for clockwise circumambulation surrounding an image, shrine or building is known as *Pradakshina patha*.

मेधि Medhi

स्तूप के चारों तरफ के ऊंचे उठे पथ (पटरी) को मेधि कहते हैं। इसे स्तूप की प्रदक्षिणा के लिए उपयोग में लाया जाता है।

The berm of a *stupa* is known as *Medhi*. The berm (*medhi*) level of the *stupa* is used for circumambulation.

वेदिका Vedika

पवित्रस्थल या वस्तु की पवित्रता बनाए रखने हेतु उसके चारों ओर निर्मित सतह से ज़रा ऊंचे घेरे या रेलिंग को वेदिका कहते हैं।

A railing or fence protecting a sacred structure or a spot or object of veneration is known as *Vedika*.

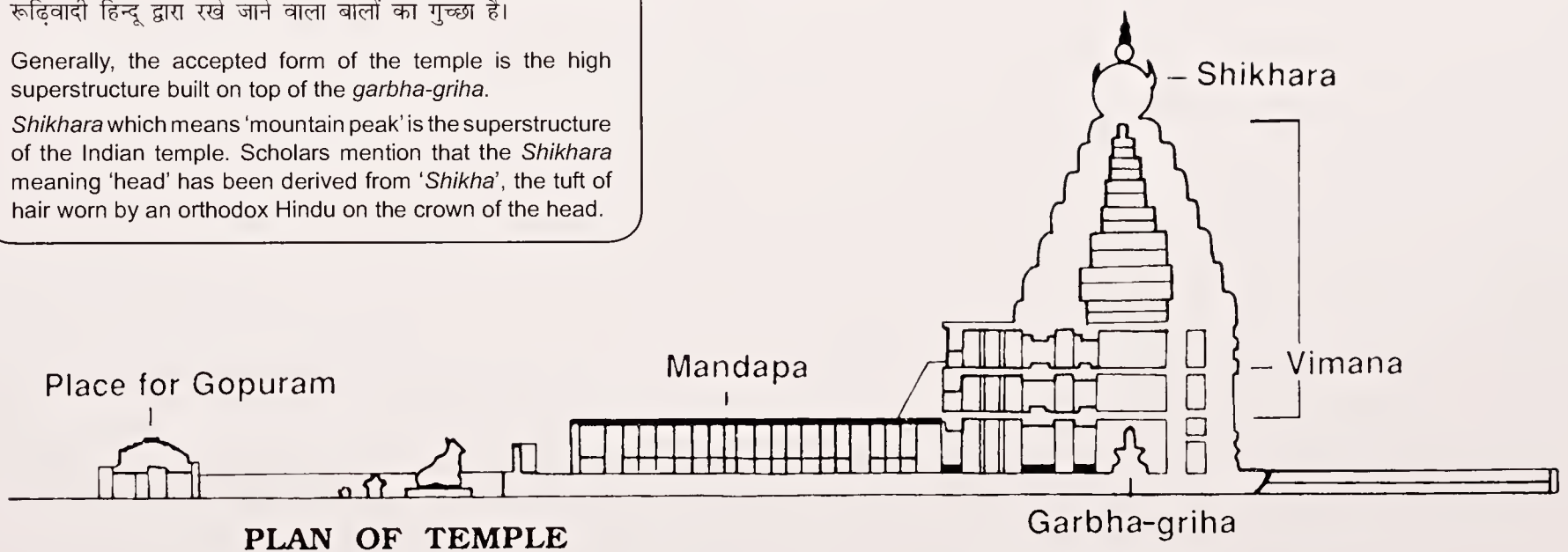
शिखर Shikhara

सामान्यतया, मंदिर शब्द सुनते ही हमारे समक्ष गर्भ-गृह की चोटी पर बनी ऊंची अधि-रचना आ जाती है। 'शिखर' का शाब्दिक अर्थ 'पर्वत की चोटी' है, जो विशेष रूप से भारतीय मंदिर की अधि-रचना का पर्याय है।

विद्वानों का मत है कि 'शिखर' का अर्थ 'सिर' है और इसे 'शिखा' शब्द से ग्रहण किया गया है, जिसका अर्थ सिर के पीछे एक रूढ़िवादी हिन्दू द्वारा रखे जाने वाला बालों का गुच्छा है।

Generally, the accepted form of the temple is the high superstructure built on top of the *garbha-griha*.

Shikhara which means 'mountain peak' is the superstructure of the Indian temple. Scholars mention that the *Shikhara* meaning 'head' has been derived from '*Shikha*', the tuft of hair worn by an orthodox Hindu on the crown of the head.



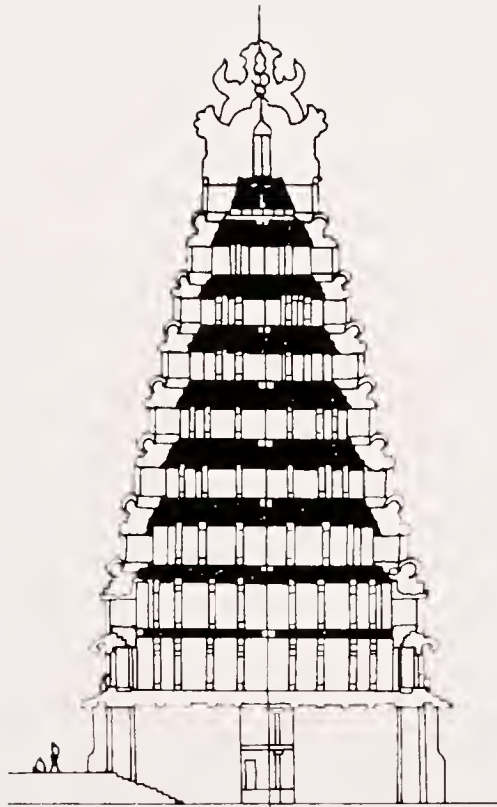
विमान Vimana

यह संरचना मूलतः स्थल-योजना में चौकोर अथवा आयताकार होती है और यह पिरामिडीय ढांचे की तरह ऊपर को कम होता जाता है। इसे कई मंजिलों तक ऊंचा बनाया जाता है।

'शास्त्रों के अनुसार' विमान विविध आनुपातिक परिणामों के साथ निर्मित मंदिर का नाम है।

This is a structure which is basically square or rectangular in ground plan. It rises several storeys high and is pyramidal in shape.

Vimana is the name of the temple built according to the proportionate measurements laid down in the *shastras*.



Gopuram

गर्भ-गृह Garbha-Griha

गर्भ-गृह, निश्चित रूप से एक गहरा अंधेरा कक्ष होता है, जहां मंदिर की प्रमुख देवी को स्थापित किया जाता है। यह कक्ष वास्तुकला योजना में चौकोर अथवा कभी-कभी आयताकार होता है और कभी-कभी बहुभुजी अथवा गोलाकार होता है।

अपने नाम के अनुसार यह इमारत 'गर्भ' की भाँति मानी जाती है तथा अनन्त काल से गर्भ-गृह का यह स्वरूप अपरिवर्तित है। नाम तथा रूप से भी गर्भ-गृह प्राथमिक महत्व का स्थान है। यह वह स्थान है जहाँ भक्तगण अपने सांसारिक विचारों को थोड़ी देर के लिए भूल कर ईश्वर से समागम करते हैं।

The *Garbha-Griha* is essentially a small dark chamber where the main deity of the temple is established. It is square in plan or very rarely rectangular or polygonal or circular.

It is believed to be the "womb" and has remained unchanged throughout the ages. By its name and form, the *garbha-griha* is a place of primary significance. This is the place towards which the devotee proceeds momentarily leaving behind all worldly thoughts to be in communion with the supreme being.

गोपुरम् Gopuram

'गोपुरम्' दक्षिण भारतीय मंदिरों का प्रवेश-द्वार है। गोपुरम् शब्द का उद्भव वैदिक काल के ग्रामों के गो-द्वार से हुआ और धीरे-धीरे यही गो-द्वार मंदिरों के विशाल प्रवेश द्वार बन गये, जिन्हें यात्रीगण बहुत दूर से भी देख सकते थे।

'गोपुरम्' की भवन-योजना आयताकार होती है। गोपुरम् की पिरामिडीय बनावट को सुदृढ़ता प्रदान करने के लिए इसकी सबसे नीचे की दो मंजिलें ऊँचाई में बराबर बनाई जाती हैं।

Gopuram is a South Indian temple gateway. *Gopuram* derived its name from the 'cow-gate' of the villages of vedic period and subsequently became the monumental entrance gate to the temple and can be seen from a distance.

The *gopuram* is oblong in plan. The two lowermost storeys are vertical in order to give a stable foundation for the pyramidal structure of the *gopuram*.

मंडप Mandapa

'मंडप' सामान्यतः एक स्तंभयुक्त सभागृह अथवा ड्योढ़ी (द्वार मंडप) होता है, जहाँ पर भक्तगण मंदिर की देवी, देव अथवा ईश्वरीय प्रतीक को अपना भक्ति-भाव समर्पित करने से पहले एकत्रित होते हैं।

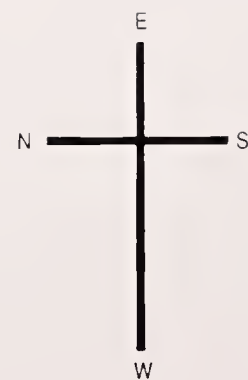
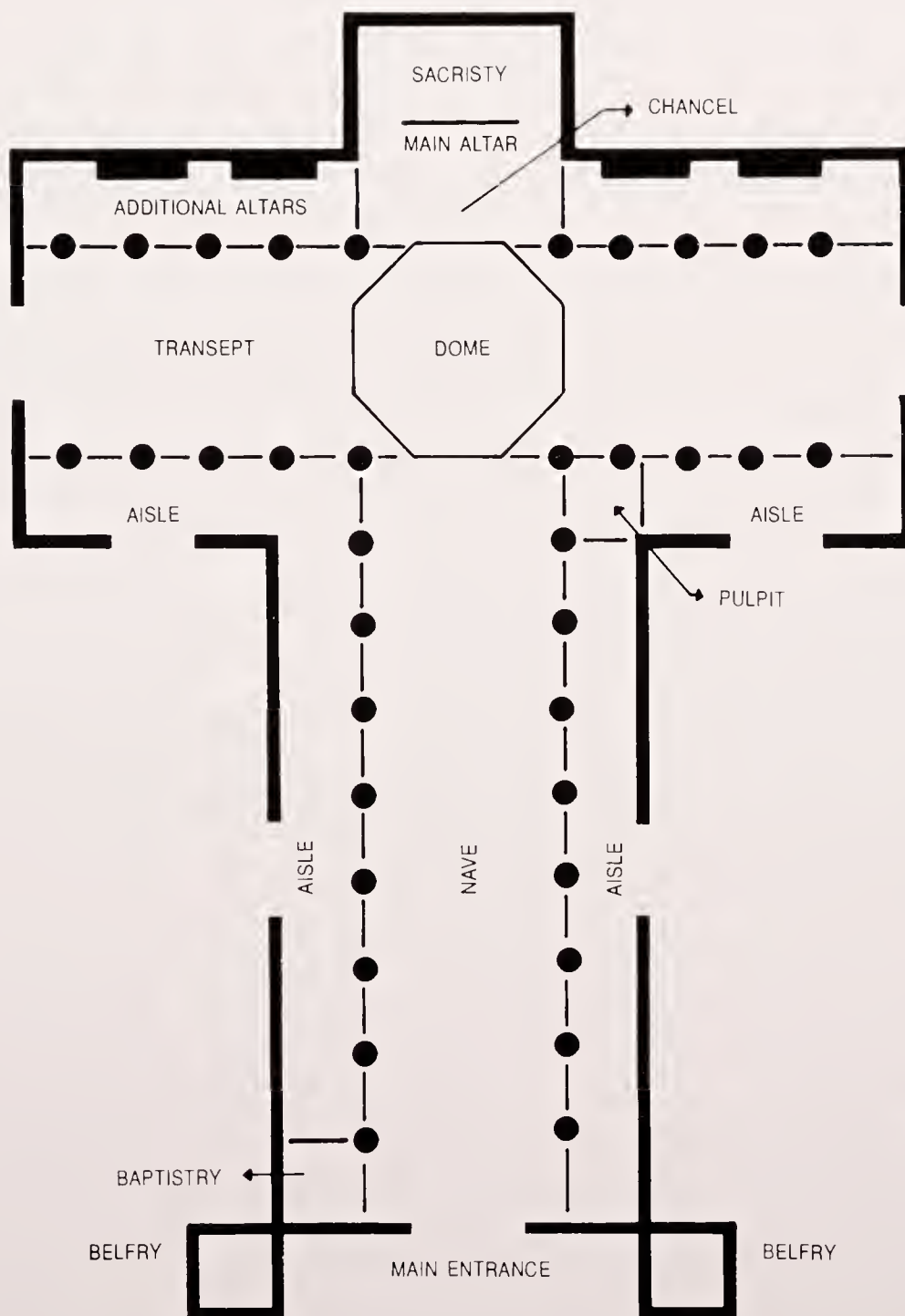
'मंडप' को सीधे गर्भ-गृह से भी जोड़ा जाता है। इस मंडप को पूर्ण रूप से या इसका कुछ भाग बंद किया जा सकता है अथवा मंडप को बिना दीवारों के भी बनाया जा सकता है।

कुछ मंदिरों में, उदाहरणार्थ-महाबलीपुरम में, समुद्र तट पर स्थित मंदिर के मंडप तथा कांचीपुरम् स्थित कैलाशनाथ मंदिर में मंडप मुख्य तीर्थमंदिर से अलग बने हुए हैं।

Mandapa is usually a pillared hall or a porch-like area where devotees assemble before moving into the sanctum sanctorum of the temple.

A *mandapa* may be attached to the *garbha-griha* directly. The structure may be entirely or partially enclosed or without walls.

In some temples like the Shore Temple at Mahabalipuram and the Kailasanatha temple, the *mandapa* is separate from the main shrine.



PLAN OF CHURCH

वेदी-खंड Altarpiece

चर्च की मुख्य वेदी की पिछली तरफ, किंतु कुछ ऊपर वेदी-खंड होता है। यह या तो चित्रित होता है, या फिर उत्कीर्ण। इसका चूलदार पंखों वाला एक फलक होता है, या तीन फलक। इसके दोनों पार्श्व चित्रित होते हैं।

An Altarpiece is a painted or carved work of art placed behind and above the altar of a church. It may be a single panel, three panels or polytych having hinged wings. Both its sides are usually painted.

बसिलिका Basilica

रोमन काल में बसिलिका से तात्पर्य एक विशाल सम्मेलन कक्ष से होता था। प्रारंभिक ईसाईयों द्वारा अपने चर्चों के लिए भी यह शब्द इस्तेमाल किया जाता था। विशेष दर्जा रखने वाले महत्वपूर्ण कैथोलिक चर्चों के लिए भी यह शब्द प्रयोग में लाया जाता है।

In the Roman period, the word refers to the function of the building—a large meeting hall—rather than to its form which may vary according to its use. The term was used by the early Christians to refer to their churches. The term is also used for important Catholic churches enjoying special status.

दीक्षा-कक्ष Baptistry

चर्च का कोई भाग या उसके साथ का कोई भवन दीक्षा-कक्ष हो सकता है। प्रायः यह वृत्ताकार या अष्टकोणीय होता है। यहां दीक्षा की शपथ दी जाती है। यहां दीक्षा-स्थल तथा पत्थर या धातु का बना एक पात्र होता है, जिसमें धार्मिक कार्यों हेतु पवित्र जल रखा जाता है।

The Baptistry may be a building or part of a church. Usually this place is round or octagonal in shape. The sacrament of baptism is administered here. It contains a baptismal font, a receptacle of stone or metal that holds the water for the rite.

सैकरिस्टी Sacristy

चांसेल के समीप के कक्ष को सैकरिस्टी कहते हैं। यहां पादरी के पवित्र परिधान रखे रहते हैं तथा पादरी यहीं पवित्र परिधानों को धारण करते हैं।

The Sacristy is a room near the chancel where sacred vestments are kept. The priests wear these ceremonial robes in this room.

चांसेल Chancel

चर्च में मुख्य वेदी के पास के स्थान को चांसेल कहते हैं। यह पादरियों एवं वृन्द गान समूह के लिए नियत रहता है। अमूमन यह स्थान जाली के माध्यम से शेष भवनों से विभक्त किया जाता है।

In a church near the altar, the space which is reserved for the clergy and choir, set off from the nave steps, and occasionally screened off is known as Chancel.

ट्रांसेप्ट Transept

कूसाकार चर्च में मुख्य आले तथा चांसेल के मध्यभाग को ट्रांसेप्ट कहते हैं। इसकी डिज़ाइन बहुत ही सुव्यवस्थित होती है।

The Transept is a well-designed part in a cross-shaped church. In the design, it is an arm forming a right angle with the nave, usually inserted between the nave and the chancel.

गलियारा Aisle

चर्च के मध्य एवं अनुप्रस्थ भाग के बराबर वाले भाग को गलियारा या पार्श्ववीथी कहते हैं। यह स्तंभों के माध्यम से इनसे अलग रहता है।

An Aisle is a section of a church alongside the nave and transept and is separated from these by rows of columns.

बेलफ्राई Belfry

चर्च के घंटे वाली मीनार को बेलफ्राई कहते हैं।

The Belfry is a tower for the church bell.

प्रार्थनालय Chapel

चर्च के उस कक्ष को प्रार्थनालय कहते हैं, जिसमें संत को समर्पित वेदी रहती है।

The Chapel is a compartment in a church containing an altar dedicated to a saint.

विश्व सांस्कृतिक सम्पदा—भारत

विद्यार्थियों एवं अध्यापकों के लिए रचनात्मक गतिविधियां

इस पैकेज में दिए गए 24 रंगीन चित्रों को आप कक्षा या स्कूल के किसी महत्वपूर्ण स्थान पर प्रदर्शित कर सकते हैं। इन चित्रों को आप गल्ले पर लगा कर इनका शीर्षक तथा चित्र के पीछे दिया गया मुख्य विवरण नीचे स्थानीय भाषा में भी लिख सकते हैं। भारतीय कला के शैक्षणिक महत्व को उजागर करने के लिए आप इन चित्रों की गहराई में जाकर उन विषयों के साथ अध्ययन कर सकते हैं, जो इनसे संबंधित हों।

अध्यापकगण भी नीचे सुझाई गई गतिविधियों में छात्रों को सम्मिलित कर चित्रों पर कार्य कर सकते हैं। इससे छात्रों की ज्ञान वृद्धि के साथ-साथ उनका मनोरंजन भी होगा।

केवल बाहरी रेखाओं वाले भारत के बड़े आकार के मानचित्र को लें। उसमें महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थानों एवं शहरों को अंकित करें। विश्व सांस्कृतिक सम्पदा-भारत 1, 2, 3 एवं 4 में दिए गए चित्रों में दर्शाए भवनों के स्थान को पहचानें।

भारत में चट्टानों को काटकर बनाई गई गुफाओं का अध्ययन करें तथा अजंता एवं एलोरा को ध्यान में रखते हुए उन लोगों के बारे में जानकारी एकत्रित करें, जिन्होंने इनका निर्माण किया था। इन गुफाओं के निर्माण-काल तथा इनके उद्देश्य का भी पता लगाएं। इन्हीं से संबंधित निम्नलिखित विषयों के बारे में भी जानकारी एकत्रित करें—

- जलवायु
- प्रकृति-नदी, पेड़-पौधे तथा पक्षी
- गुफाओं के आसपास रहने वाले लोग तथा उनका व्यवसाय आदि।
- उस काल के संगीत, नृत्य, नाटक, शिल्प आदि।
- गुफाओं में दर्शाए गए देवी-देवता, पौराणिक कथाएं, त्यौहार, रीति-रिवाज।

सांस्कृतिक पैकेज में दिए गए भवनों एवं मूर्तियों के चित्रों को देख कर इनके रेखा-चित्र बनाएं।

इन पैकेजों में वर्णित भवनों एवं स्मारकों को देश के प्राचीन एवं मध्यकाल के यात्रियों/इतिहासकारों ने इन पैकेजों में दर्ज भवनों एवं स्मारकों को देखा तथा वे लोग इनसे संबंधित वृत्तांतों तथा संस्मरणों को लिखकर छोड़ गए हैं। इन वृत्तांतों एवं संस्मरणों को एकत्रित कर उनमें वर्णित इन स्थानों का शैलीगत वर्णन तथा स्थानों के नाम के उच्चारण को समझिए।

अपने स्कूल या घर का भू-चित्र बना कर उसमें खिड़की, दरवाजों तथा स्तंभों की स्थिति दर्शाइए।

धार्मिक स्वरूप को समझना

सभी धर्मों का एक ही उद्देश्य होता है कि लोग बेहतर एवं संपूर्ण जीवन जिएं। इन सभी धर्मों का बाह्य रूप, जैसे कि कर्मकांड तथा प्रथाएँ, प्रायः ऐतिहासिक, आर्थिक, राजनैतिक और यहां तक कि भौगोलिक कारणों से एक-दूसरे से भिन्नता रखता है।

कई धार्मिक रीति-रिवाज एवं समारोह कृषि से जुड़े होते हैं तथा वे जीवन के आनंद को व्यक्त करते हैं। प्रायः हर काल के अपने धार्मिक विश्वासों ने अपने युग के वास्तुकारों, मूर्तिकारों एवं चित्रकारों को प्रभावित किया है। इसी

World Cultural Heritage Sites—India

Creative Activities for School Students and Teachers

The 24 pictures provided in this package can be displayed in the classroom or at any prominent place in the school. The pictures may be stuck on card-board with the title and description in the regional language. They can also be studied in depth with activities that bring out the educational value of Indian art. The teachers can work with a few pictures at a time ensuring students' enjoyment in learning by involving them in some activities suggested below:

On a large outline map of India, mark important historical sites and places. Find the location of buildings given in the pictures in the World Cultural Heritage Sites—India, 1, 2, 3, and 4

Make a study of the rock-cut caves in India and collect information of the people who built these caves with special reference to Ajanta and Ellora caves. Find out the dates of these caves and for the purpose they were used. Collect the following information:

- Climate
- Nature—rivers, plants, animals and birds
- People living around the caves, their occupation, etc.
- Music, dance, drama, crafts, etc. of the period
- Customs, festivals, myths, gods & goddesses depicted in these caves.

Make a sketch/rough outline of the buildings/sculptures from the pictures provided in the Cultural Packages.

The buildings/monuments mentioned in these packages were visited by a number of travellers/historians in ancient and medieval periods of Indian history and these travellers have left a vivid and interesting account of these buildings/monuments. Collect such travelogues/memoirs. Notice interesting details in these travelogues, such as the style of descriptions, pronunciations of places and the surrounding areas of monuments of that period.

Make a simple ground plan of your school, home or college and show windows, doors and pillars.

Understanding religious concepts

All religions aim at helping us to lead better and richer lives. The outward manifestations of religion such as rituals, customs differ from one another for historical, economic, political and even geographical reasons. Many religious rituals and ceremonies are linked with the annual agriculture cycle and the celebration of life. Religious beliefs have influenced the architects, sculptors, and painters of the by-gone era to create beautiful monuments using specific symbols and motifs pertaining to each religion.

Invite your students to study the religions and people of India and collect information on each religion such as Hinduism, Buddhism, Christianity, Islam, Jainism, Sikhism and others.

- Choose pictures from the World Cultural Heritage Sites in India—1, 2, 3 and 4 of religious monuments, sculptures and paintings and write descriptions;

कारण कारीगरों ने उस धर्म से संबंधित विशेष प्रतीकों का इस्तेमाल करते हुए सुंदर स्मारकों की रचना की है।

अध्यापकगण अपने छात्रों को भारत के लोगों एवं उनके विभिन्न धर्मों का अध्ययन करने को कहें। साथ ही उनसे हिंदू, बौद्ध, ईसाई, इस्लाम, जैन तथा सिख आदि हर धर्म के बारे में जानकारी जुटाने के लिए भी कहें।

- विश्व सांस्कृतिक संपदा-भारत के 1, 2, 3, एवं 4 में से धार्मिक स्मारकों, मूर्तियों एवं रंगचित्र का चुनाव करें और हुलिया लिखें।
- हर मत के दर्शन को प्रकट करने वाली उक्तियों, लेखों का संग्रह करें।
- प्रत्येक धर्म की प्रार्थना से जुड़े अनुष्ठान के चित्रों को एकत्रित करें।
- हर जाति के महत्वपूर्ण संतों, कवियों, अध्यापकों तथा प्रख्यात व्यक्तियों के बारे में कहानियां और लेख लिखें।
- किसी एक धर्म, उदाहरणार्थ ईसाई धर्म को लें तथा
 - : ईसा मसीह
 - : सेन्ट जेवियर
 - : मदर टेरेसा
 का जीवन वृत्तांत लिखें।

या

- : भगवान शिव, महिषासुरमर्दिनी, भगवान बुद्ध तथा महावीर के बारे में कहानियां लिखें।
- : त्यागराज, तुलसीदास, मीराबाई

या

- : पैगम्बर मोहम्मद, शेख सलीम चिश्ती के बारे में लिखें।

- विभिन्न स्मारकों का निरीक्षण कर भवन के फर्श, उत्थापन योजना तथा सजावट का अध्ययन करें।

त्यौहार एवं लोग

- सभी धर्मों के वर्ष भर मनाए जाने वाले त्यौहारों का एक कैलेंडर बनाएं। यह भी बताएं कि वे किस प्रकार मनाए जाते हैं। इस कैलेंडर में—
 - : तिथि, मास
 - : त्यौहार से संबंधित कथा या मिथक
 - : मनाने का कारण
 - : त्यौहार से संबंधित गतिविधियां, जैसे कि अनुष्ठान, परिधान, खाद्य-पदार्थ, गीत, नृत्य आदि हों।
- विश्व सांस्कृतिक सम्पदा-भारत के 1, 2, 3 एवं 4 में से चित्रों को प्रदर्शित कर अधोलिखित विषयों को क्रमवार चित्रित करें—
 - : शिलाखंडों को तराश कर की गई वास्तुकला
 - : हिंदू मंदिर
 - : इस्लामी स्मारक
 - : बौद्ध मंदिर

- Collect quotations which contain the essence of the philosophy of each faith;
- Collect pictures of rituals connected to prayer of each religion;
- Write stories of important saints, poets, teachers and important members of each community;
- Collect symbols associated with different religions and find their meaning and significance.
- Take one religion such as Christianity and write about the life of :
 - : Jesus Christ
 - : St. Xavier
 - : Mother Teresa

or

- : Stories about Siva, Mahisasuramardini, Lord Buddha, Lord Mahavira

or

- : Thyagaraja, Tulsidas, Mira Bai

or

- : Prophet Mohammad, Sheikh Salim Chisti

- Visit various monuments and study the floor and elevation plans and decorations of the building.

Festivals and People

- Make an annual calendar of festivals of all religions and describe how each one is celebrated, the calendar may include:
 - : Date, month
 - : Story or myth related to the festival
 - : Reason or purpose of celebration
 - : Activities connected with festival which may include customs, costume, food, songs, dances, etc.
- Exhibit pictures provided in the World Cultural Heritage Sites—India, 1, 2, 3 and 4 to illustrate the following themes in chronological sequences:
 - : Rock-cut architecture
 - : Hindu temples
 - : Stupas
 - : Islamic monuments
 - : Churches and Convents



: चर्च एवं कॉन्वेन्ट्स

सुलेख एवं चित्रण

किसी मनपसंद कविता को चुन कर उसे कोरे कागज के मध्य में लिखें। आपने स्मारकों या हस्तलिखित पुस्तकों में सुलेख को सजावटी प्रतीक के तौर पर इस्तेमाल किया हुआ देखा होगा। जो कविता आपने कागज के मध्य में लिखी थी, उसके चारों तरफ पारंपरिक डिज़ाइन व सजावटी प्रतीकों का उपयोग करते हुए बार्डर बनाएं।

अधोलिखित विषयों पर निबंध लिखें—

- : अजंता की गुफाओं के आसपास रहने वालों का जीवन।
- : मेरा मनपसंद शहर।
- : मैंने एलोरा के मंदिर-निर्माण में कैसे सहायता की?
- : स्मारकों से विहीन विश्व!
- : संपूर्ण विश्व में आपसी समझ एवं प्यार को बढ़ाने में स्मारकों की भूमिका।

भारत के राष्ट्रीय पशु, पक्षी, पुष्प के बारे में कविता, निबंध लिखें या उनका चित्र बनाएं। राष्ट्रीय प्रतीक वाली वस्तुओं जैसे कि मुद्रा तथा डाक-टिकटों आदि का संग्रह करें।

भगवान बुद्ध तथा महावीर जैसे महान व्यक्तियों के जीवन से संबंधित ऐसी कहानियां लिखें जो सादगी एवं सच्चाई, जीवन तथा प्रकृति को सम्मान देने के महत्व को दर्शाती हों।

भगवान बुद्ध, महावीर, अकबर तथा राजराजा (प्रथम) आदि के बारे में नाटक लिख कर उनका मंचन करें।

विभिन्न संतों के चित्रों तथा उक्तियों का संग्रह करें।

प्रकृति तथा उसके कला पर प्रभाव विषय पर प्रश्नोत्तरी आयोजित करें। पूछे जाने वाले प्रश्न, प्रकृति व कला के विभिन्न रूपों जैसे मूर्तिकला, चित्रकला, नृत्य, संगीत आदि पर होने चाहिए।

अधोलिखित विषयों पर आप वाद-विवाद एवं भाषण प्रतियोगिताएं भी आयोजित कर सकते हैं—

- : भारत की प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक संपदा को क्षति पहुंचाकर विकास का कार्य नहीं होना चाहिए।
- : विज्ञान व प्रौद्योगिकी के नाम पर क्या मानव को प्रकृति के साथ खिलवाड़ करना चाहिए?
- : क्या हमारे स्रोत हमेशा के लिए खत्म हो जाएंगे?
- : हम जो प्रकृति से लेते हैं, क्या उसे वापस करते हैं?

भारत के विभिन्न प्रांतों के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, कला व सामाजिक कार्यों के क्षेत्र में प्रसिद्ध भारतीयों के बारे में कहानियां तथा लेख लिखें।

Calligraphy and Illustrations

Choose any poem that you like and write it neatly in the centre of a clean new page. You may have seen calligraphy on monuments as decorative motifs or in hand-written manuscripts. Try and make a beautiful border around the poem that you have written using traditional designs and decorative motifs.

Write an essay on the following topics in your best handwriting.

- : Life of the people living around the Ajanta Caves
- : The City I like best today
- : I helped to build the Kailasanatha temple at Ellora

Write your views on how the world would be without these beautiful monuments.

Indicate the role these monuments play in enhancing love and understanding.

Write poems, essays or paint pictures of India's national animal, bird, flower and collect items which have the national emblem such as currency notes, stamps, etc.

Write stories of the life of Lord Buddha and Lord Mahavira which teach us values such as respect for nature, life, simplicity and truth.

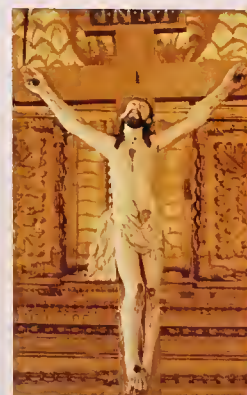
Write and enact dramas on the lives of Lord Buddha, Lord Mahavira, Akbar, Rajraja I.

Conduct quiz competitions on nature in general and influence of nature on art. These quiz competitions should cover all aspects of nature and all the arts such as sculpture, painting, dance, music, etc.

Conduct debate competitions on some topics such as:

- : Development should not be at the cost of losing our natural and cultural heritage;
- : In the name of science and technology—should man interfere with nature's master plan?
- : Will our resources last forever?
- : Do we give back to nature what we receive from it?

Write stories of famous Indians in the field of science and technology, art and social sciences.





CENTRE FOR CULTURAL RESOURCES AND TRAINING

15 A, Sector-7, Dwarka, New Delhi-110 075

Phone : 25309300, Fax : 91-11-25088637

email : dir.ccrt@nic.in

website : www.ccrtindia.gov.in

विश्व सांस्कृतिक सम्पदा-भारत

World Cultural Heritage Sites-India

3

1. अजंता की गुफाओं का दृश्य, औरंगाबाद, महाराष्ट्र

अजंता अपने मठों और गुफा-मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है। वधोरा नदी के ऊपर घोड़े की नाल के आकार की चट्टान को कारीगरों ने तराशा। यहां लगभग 30 गुफाएं हैं और उन में से बहुत सी वास्तुकला, मूर्तिकला और चित्रकला के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धियां हैं। इन गुफाओं को वाकाटक शासकों के काल में तराशा गया, जिनके गुप्त वंश के साथ वैवाहिक संबंध थे।

वाकाटक शासक हरिषेण के मंत्री और कुछ अन्य जागीरदारों ने दिल खोल कर बौद्ध भिक्षुओं एवं कलाकारों के संघ को आर्थिक सहायता एवं चीजें उपलब्ध करवायीं।

2. बोधिसत्व पद्मपाणि, गुफा नं. 1, अजंता, औरंगाबाद, महाराष्ट्र

अजंता की गुफा नं. 1, उत्तम विहार है तथा इसके स्तंभ सुंदर ढंग से उत्कीर्ण हैं। गुफा के अग्रभाग में सिद्धार्थ के जीवन की उन चार महत्वपूर्ण घटनाओं को एक फलक पर उत्कीर्ण किया गया है, जिन्होंने उनके मन को भौतिक सुखों से हटा कर आध्यात्मिक ज्ञान की तरफ मोड़ दिया था।

गुफा नं. 1 की यह बोधिसत्व पद्मपाणि की आकृति चित्रकला का एक अनुपम उदाहरण है। भव्य मुद्रा, नपी-तुली भाव भंगिमा तथा सुहावने रंग सभी मिल कर क्षण भर में दर्शकों का ध्यान आकर्षित कर लेते हैं।

इस आकृति में चित्रकार ने बोधिसत्व पद्मपाणि के चेहरे पर सरलता व दैवीय अबोध को साकार किया है। उन्होंने नीले कमल के फूल को बड़ी कोमलता से पकड़ रखा है। साथ ही अधर्मुंदे नेत्रों को दिखा कर कलाकारों ने ध्यान-मुद्रा का प्रभाव उत्पन्न किया है।

बौद्ध-धर्म ग्रंथों के अनुसार पद्मपाणि, गौतम के अदृश्य हो जाने के पश्चात् भगवान बुद्ध के कर्तव्यों को निभा रहे हैं और वे तब तक ऐसा करते रहेंगे, जब तक कि ‘‘मैत्रेय’’ के रूप में वे पृथ्वी पर पुनः अवतरित नहीं हो जाते।

3. बोधिसत्व अवलोकितेश्वर, गुफा नं. 1, अजंता, औरंगाबाद, महाराष्ट्र

अजंता की गुफाएं बौद्धकला का एक प्रलेखन है। मूर्तिकारों, चित्रकारों और संरक्षकों-सभी ने मिलकर भारतीय कला के एक सुंदर रूप को प्रस्तुत किया है।

अजंता की गुफा नं. 1 में सुंदर भित्तिचित्रों को सुरक्षित रखा गया है। उनमें बोधिसत्व पद्मपाणि और अवलोकितेश्वर के चित्र भी हैं। अंजता के ये भित्तिचित्र लगभग टेम्परा तकनीक से बनाए गए हैं।

मूर्तियों की भाँति चित्रित फलकों में भी महात्मा बुद्ध और बोधिसत्व का स्थान महत्वपूर्ण है।

इस चित्र में आप बोधिसत्व अवलोकितेश्वर की आकृति की बारीकियों का अवलोकन कर सकते हैं। उनके चेहरे के पवित्र भाव आंतरिक अलौकिक आनंद को प्रकट कर रहे हैं। रत्नाभूषित शरीर और रत्नजड़ित मुकुट प्रेरणादायक हैं; साथ ही, आध्यात्मिक समृद्धि और तेज को प्रदर्शित करते हैं।

आज संरक्षकों का मुख्य दायित्व इन भित्ति चित्रों को सुरक्षित रखने का है।

4. भगवान बुद्ध की पद्मासन मुद्रा, गुफा नं. 1, अजंता, औरंगाबाद, महाराष्ट्र

अजंता के भव्य भित्तिचित्रों ने अनेक बार विद्वानों का ध्यान, अजंता की मूर्तिकला के वैभव से हटा कर अपनी ओर आकर्षित किया है।

यहाँ आने वाले दर्शकों के समक्ष कलाकारों ने वास्तुकला, मूर्तिकला एवं चित्रकला की पूर्णतः समन्वित एवं लयात्मक तत्सवीर प्रस्तुत की है। मोटे तौर पर बौद्ध कला के प्रारंभिक स्वरूप को ‘‘हीनयान’’ और ‘‘महायान’’ पक्षों में विभाजित किया गया है।

गुफा नं. 1 के मंदिर गर्भ में बैठे हुए भगवान बुद्ध की आकृति है। इस चित्र में दर्शाई गई उन की पद्मासन की स्थिति, धर्म चक्र प्रवर्तन मुद्रा, सादर झुके हुए पांच शिष्य तथा चक्र के दोनों तरफ हिरण, ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात् वाराणसी के निकट सारनाथ के हिरण पार्क में भगवान बुद्ध के पहले उपदेश के प्रतीक हैं।

भगवान बुद्ध की मुख्य आकृति के बगल की दो आकृतियों ने मंदिर-गर्भ की स्थापत्य-कला को समृद्ध किया है।

दीवारों और छत के साथ-साथ गुफा के अधिकांश भागों को चित्रित किया गया था, जिनमें मूर्तियां, दरवाजों की चौखट और स्तंभ भी शामिल हैं।

5. अग्रभाग, गुफा नं. 19, अजंता, औरंगाबाद, महाराष्ट्र

अजंता की सभी गुफाओं को उनकी डिज़ाइन के आधार पर दो श्रेणियों-चैत्यगृह और विहार-में विभाजित किया जा सकता है।

गुफा नं. 19 वास्तव में एक सुंदर चैत्यगृह है, जिसमें प्रवेश करने पर आखिरी सिरे पर वैकल्पिक स्तूप दिखाई देता है। वास्तविक रूप में चैत्यगृह एक आयताकार पूजा-कक्ष है। स्तंभों की कतारें इसे विभाजित करती हैं। प्रवेश-द्वार के सामने दूसरी तरफ पूजा-स्थल होता है। वहां भी अक्सर एक प्रतिमा होती है। गुफा नं. 19 के स्तंभ सुंदर ढंग से उत्कीर्ण किए गए हैं।

जैसा कि, प्रस्तुत चित्र में दृष्टिगोचर है-गुफा के अग्रभाग में एक सुंदर द्वारमण्डप है और प्रवेश द्वार के ऊपर एक विशाल प्रभावशाली चैत्यखिड़की। प्रवेश-द्वार के ऊपरी स्तर पर सजावट और खिड़की के ऊपर का सुंदरतापूर्वक उत्कीर्ण किया गया शिरोभाग चंद्रशाला की तरह है, जो गुप्तकालीन मंदिरों की सजावट में दिखाई देता है। इस चैत्यखिड़की के दोनों तरफ खड़े सेवक अत्यंत सुव्यवस्थित हैं।

इस गुफा के बाहर भी मूर्तिकला का एक नमूना है, जिसमें नागराज अपनी अर्द्धांगिनी के साथ उत्कीर्ण हैं। मूर्तिकला का यह नमूना इस चित्र में दृष्टिगोचर नहीं है।

6. आंतरिक भाग, परिनिर्वाण, गुफा नं. 26, अजंता, औरंगाबाद, महाराष्ट्र

अजंता की गुफाओं की मूर्तियाँ और उत्कीर्ण डिज़ाइन भी उतने ही सुंदर हैं, जितने वहां के भित्ति-चित्र तथा ये सब उस काल की कला के सुंदर एवं अनुपम उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

यह गुफा उत्तरकालीन वाकाटक कला का चैत्यगृह है। इस गुफा में भगवान बुद्ध की परिनिर्वाण अवस्था का मूर्ति-शिल्प अत्यंत प्रभावशाली एवं बेजोड़ है।

यह मूर्ति-शिल्प प्रदक्षिणापथ की बायीं दीवार पर लगभग सात मीटर तक उत्कीर्ण है। आने वाले दर्शकों पर यह मूर्ति-शिल्प गहरा दार्शनिक व कलात्मक प्रभाव डालता है। मूर्ति-शिल्प के निचले स्तर पर भगवान बुद्ध की परिनिर्वाण अवस्था से शोकाकुल लोगों और उनके शिष्यों को दिखाया गया है एवं साथ में ऊपरी स्तर पर दैवीय शक्तियों को भी श्रद्धांजलि देते दर्शाया गया है।

7. कैलाशनाथ मंदिर, एलोरा, औरंगाबाद, महाराष्ट्र

8 वीं शताब्दी में राष्ट्रकूटों ने पश्चिमी चालुक्य वंश के प्रारंभिक शासकों पर दक्कन में विजय पाई थी। वैसे तो अनेक स्थानों पर राष्ट्रकूटों की कला के नमूने देखे जा सकते हैं, मगर इनकी कला का मुख्य स्थान एलोरा है। यहाँ पर उस काल की वास्तुकला व इंजीनियरी तकनीकों के अद्भुत सम्मिश्रण से बना एक गुहा-मंदिर स्थित है। शिलाओं का उत्खनन कर बनाए गए इस मंदिर का निर्माण कृष्ण (प्रथम) ने करवाया था। आज यह कैलाशनाथ मंदिर के नाम से विख्यात है। इसके निर्माण में वास्तुकारों ने परंपरा से विपरीत ढंग अर्थात् पहले नीचे के बजाए, ऊपर से नीचे की ओर निर्माण-कार्य शुरू किया।

वास्तुकारों ने बड़ी ही सूक्ष्मता से कार्य-योजना बनाई और चट्टानों को तराश कर कार्य-योजना-अनुसार रूप दिया। मंदिर के गर्भगृह के प्रवेश द्वार के दोनों तरफ गंगा नदी और यमुना नदी की देवियों की विशालकाय प्रतिमाएं हैं। आज भी इनके भगनावशेष वहाँ देखे जा सकते हैं।

यद्यपि एलोरा का कैलाशनाथ मंदिर आकार में बड़ा है, मगर इसकी डिज़ाइन तमिलनाडु में कांचीपुरम् के कैलाशनाथ मंदिर और कर्नाटक के विरूपाक्ष मंदिर जैसी है।

8. रामायण का दृश्य, कैलाशनाथ मंदिर, एलोरा, औरंगाबाद, महाराष्ट्र

एलोरा के कैलाशनाथ मंदिर का निर्माण पहाड़ की ढलान पर उत्तरी व दक्षिणी दिशा में दो खाईयों को पाट कर किया गया। पूर्वी दिशा में भी एक खाई पाटी गयी, जो उत्तरी व दक्षिणी खाईयों को उन के पूर्वी किनारे पर जोड़ती है। मंदिर पश्चिमाभिमुखी है। मंदिर के मुख्य प्रवेशद्वार के बायें भाग में तक्षित मूर्तियाँ शैव मत का प्रतिनिधित्व करती हैं तो दायें भाग की मूर्तियाँ वैष्णव मत का।

मंदिर के अग्रभाग व ‘‘विमान’’ के पिछले हिस्से की दीवारों पर भी मूर्तियाँ व डिज़ाइन उत्कीर्ण किए गए हैं। दक्षिण दिशा में मूर्ति शिल्प के एक फलक पर रामायण की कथा को उत्कीर्ण किया गया है, जबकि उत्तरी दिशा में उत्कीर्ण मूर्ति शिल्प के एक फलक पर महाभारत की कथा दर्शायी गई है।

मंदिर में मूर्ति शिल्पों के वर्णनात्मक फलक एक प्रकार से भारतीय पौराणिक एवं दंत कथाओं की दृश्यात्मक जानकारी के विपुल भंडार हैं। प्रस्तुत चित्र में एक विस्तृत फलक पर रामायण की कथा के अंशों को दर्शाया गया है।

9. कैलाश पर्वत को हिलाता रावण, एलोरा, औरंगाबाद, महाराष्ट्र

एलोरा का कैलाशनाथ मंदिर स्वयं में एक ऐसा संपूर्ण केन्द्र है, जिसमें मंदिर के द्वार, मुख्य भवन और पवित्रस्थल गर्भ-गृह सहित सभी आवश्यक अंग समाहित हैं। इसी में वे उप पवित्रस्थल भी शामिल हैं, जहां पर चट्टानों पर पौराणिक आकृतियाँ एवं कथाएँ उत्कीर्ण की गई हैं।

यहां एक अत्यंत प्रसिद्ध मूर्ति-शिल्प में बहु-भुजा, बहु-मस्तक वाले राक्षस रावण को कैलाश पर्वत को हिलाते हुए दिखाया गया है। इस मूर्ति-शिल्प के ऊपरी हिस्से में भगवान शिव को पार्वतीजी के साथ बैठा दिखाया गया है। पार्वतीजी भय के मारे भगवान शिव का आश्रय ले रही हैं।

यह मूर्तिशिल्प विश्वास के उस भाव को दर्शाता है कि ईश्वर महान है और बुरी शक्तियों का नाश करता है, चाहे वे कितनी ही शक्तिशाली क्यों न हों। एलोरा स्थित विभिन्न हिन्दू गुफा-मंदिरों में इस मूर्ति शिल्प को कई स्थानों पर उत्कीर्ण किया गया है। कैलाशनाथ मंदिर में यह शिल्प मंडपम् के दक्षिणी हिस्से के द्वारमण्डप के नीचे स्थित है। तीन आयामों में किए गए सूक्ष्म उत्कीर्णन का अपना ही एक नाटकीय प्रभाव पड़ता है।

10. बैठे हुए भगवान बुद्ध, गुफा नं. 10, एलोरा, औरंगाबाद, महाराष्ट्र

एलोरा की सभी गुफाएँ, चाहे वे बौद्ध, हिन्दू या जैन धर्म से संबंध रखती हों, स्थापत्य-कला व मूर्तिकला के अद्वितीय उदाहरणों से भरपूर हैं।

गुफा नं. 10 चैत्य गृह है। ‘विश्वकर्मा-गुफा' के नाम से भी जानी जाने वाली इस गुफा में तराशी गई कुछ सुंदरतम मूर्तियाँ हैं।

चैत्य-गृह के इस कक्ष में भगवान बुद्ध और उन के दोनों तरफ दर्शाए बोधिसत्व खगोलीय दिव्यों की आराधना में लीन हैं। इस की कमानीदार छत दर्शकों को प्राचीन काष्ठ-वास्तुकला का स्मरण कराती है। स्तंभों के ठीक ऊपर मूर्ति-शिल्प की तीन पंक्तियों पर भगवान बुद्ध से संबंधित फलक दोहराए गए हैं। इस गुफा की तिपतिया खिड़की वास्तुकला का एक अनुपम उदाहरण है; साथ ही, चैत्य-गृह का मनमोहक दृश्य भी दिखलाती है। गुफा के अग्रभाग में तीन ओर शिल्प तक्षित किए गए हैं।

11. मानुषी बुद्ध, गुफा नं. 12, एलोरा, औरंगाबाद, महाराष्ट्र

एलोरा की 34 गुफाओं में से प्रथम 12 गुफाएं बौद्ध धर्म से संबंधित हैं। इन गुफाओं में शिल्पकार मूर्तियां बनाते समय शुद्धता, प्रखरता और शांति का भाव उत्कीर्ण करने में सफल रहा है।

सभी गुफाएँ आकार व बनावट में एक-दूसरे से भिन्न हैं। उदाहरणार्थ, गुफा नं. 6 में कक्ष की पूरी लम्बाई में फैली पथरों की दोहरी बेंच, इसकी अपनी एक विशेषता है। तीन ताल के नाम से जानी जाने वाली गुफा नं. 12 चैत्य गृह एवं विहार का मिश्रण है। इसका अग्रभाग सज्जित नहीं है, लेकिन आंतरिक भाग सुंदर मूर्तियों, आदि से सुसज्जित है। गुफा नं. 12 की एक दिलचस्प विशेषता यहां मानुषी बुद्धों की मूर्तियों का होना है। मानवीय शरीर में नश्वर बुद्ध, शाक्यमुनि आदि को मानुषी बुद्धों के रूप में जाना जाता है।

इस चित्र में भगवान बुद्ध तथा मानुषी बुद्धों की मूर्तियाँ दिखाई दे रही हैं।

12. बाह्य-दृश्य, गुफा नं. 32, एलोरा, औरंगाबाद, महाराष्ट्र

एलोरा में जैन गुफाएँ अन्य गुफाओं से कुछ दूरी पर स्थित हैं। कुल 34 गुफाओं में केवल पांच गुफाएँ (नं. 30 से 35 तक) जैन गुफाएँ हैं। इन में से केवल तीन गुफाएँ प्रचुर मात्रा में सूक्ष्म रूप से उत्कीर्ण शिल्प एवं चमकीलेपन के कारण महत्वपूर्ण मानी जाती हैं।

इंद्रसभा के नाम से प्रसिद्ध गुफा नं. 32 सभी जैन गुफाओं में हर प्रकार से सुंदर व सबसे अलंकृत मानी जाती है।

एलोरा के कैलाशनाथ मंदिर की भाँति इस गुफा-मंदिर का विमान द्रविड़ शैली

की विशेषता रखता है। स्तंभ, प्रतीक अभिविक्त होते हुए धरातल में असमान रूप से आयताकार हैं। पवित्रस्थल भी कैलाशनाथ मंदिर (गुफा नं. 16) की भांति ऊँचे चबूतरे पर स्थित हैं। यहाँ सुंदर ढंग से उत्कीर्ण कमल का फूल आकर्षित करता है।

13. बाहुबली गुफा नं. 32, एलोरा, औरंगाबाद, महाराष्ट्र

इंद्रसभा नाम से प्रसिद्ध गुफा नं. 32 एलोरा की सुंदरतम जैन गुफाओं में से एक है। प्रांगण में स्थित प्रवेश द्वार इस के भूल में प्रविष्टि करवाता है।

भूल के पवित्र पूजा स्थान में भगवान वर्धमान महावीर की प्रतिमा है। पहली मंजिल पर सुक्ष्म रूप से तक्षित प्रतिमाएं, सुसज्जित स्तंभ और चित्रित छत है। इस तल के पवित्र पूजा स्थान में भी बैठे हुए भगवान महावीर की प्रतिमा है।

पवित्र पूजा स्थल की पिछली दीवार पर दो महत्वपूर्ण जैन आकृतियाँ हैं। बाईं तरफ पार्श्वनाथ की विशाल आकृति है तो दाईं तरफ बाहुबली की प्रसिद्ध आकृति। बाहुबली पूर्णतः खिले कमल के फूल पर खड़े दर्शाए गए हैं, मानो किसी प्रण को पूरा करने की मुद्रा में हों।

बाहुबली के चारों तरफ उग आयी घनी वनस्पति, उनकी बहनें, माला लिए खड़ी दिव्य आकृतियाँ, जंगली जानवर, हिरण, सर्प व बिच्छू आदि भी दर्शाए गए हैं। गुफा मंदिर की दीवारों पर, जैन धर्म की अनेक पौराणिक कथाएं, जैसे कि कामथ का आक्रमण, पार्श्वनाथ का रज्याभिषेक आदि भी तक्षित हैं।

एलोरा की जैन गुफाओं में स्थित मंदिरों को जैन धर्म के 24 तीर्थंकरों की प्रतिमाओं से भी सजाया गया है।

14. बाह्य-दृश्य, एलिफेंटा गुफाएं, एलिफेंटा, महाराष्ट्र

एलिफेंटा की गुफाएँ अपने आकार, बनावट, मूर्तिकला एवं वास्तुकला की कल्पना को ले कर दक्षिणी एशिया में शिलाखंड तराशने की वास्तुकला में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। यह गुफाएँ एलिफेंटा द्वीप के पश्चिम पहाड़ को तराश कर जल स्तर से 250 फीट ऊपर बनाई गई हैं।

इसके स्तंभ व शिल्प विशाल हैं और वास्तुकला सम्बंधी प्रारूप खुलेपन का आभास देता है। स्तंभों को आकर्षक आकार दिया गया है और स्तंभों के ऊपरी हिस्सों की सजावटें अजंता की गुफाओं में भी देखी जा सकती हैं।

इस क्षेत्र की गुफा-कला एवं वास्तुकला का अध्ययन करने पर पता चलता है कि पश्चिमी भारत के बाघ, अजंता, एलोरा व एलिफेंटा के गुफा मंदिरों में दरवाजों की चौखट, स्तंभों के प्रारूपों में कुछ समानताएं हैं।

15. शिव-गुफा, एलिफेंटा, महाराष्ट्र

एलिफेंटा-गुफा का मुख्य प्रवेशद्वार उत्तराभिमुखी है, जबकि धार्मिक मान्यताओं के अनुसार हिंदू-मंदिर प्रायः पूर्वाभिमुखी होते हैं। गुफा पूर्व एवं पश्चिम दिशाओं में भी तराशी गई है, जो प्रवेश की सुविधा प्रदान करती है। इस के आंतरिक भाग में मूर्तियों से उत्कीर्ण लगभग 10 फलक भगवान शिव से जुड़ी दंतकथाओं को दर्शाते हैं। मुख्य पवित्रस्थल लगभग 130 फीट चौड़ा है तथा स्तंभों की छः कतारें हैं और हर पंक्ति में छः स्तंभ हैं।

मुख्य शिव-गुफा के केन्द्रीय कक्ष में एक छोटा-सा चौकोर मंदिर हैं, जिसमें शिवलिंग स्थापित है। इस के द्वारों पर द्वारपाल उत्कीर्ण किए गए हैं। पुर्तगाली सेना द्वारा द्वीप पर कब्जा करने की कार्यवाही के दौरान उन के द्वारा की गई गोलाबारी से इन मूर्तियों को क्षति पहुंची। पवित्रस्थल के चारों तरफ का खाली स्थान परिक्रमा करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

16. नटराज, एलिफेंटा, महाराष्ट्र

चित्र में यह एक क्षतिग्रस्त बड़ी मूर्ति का अंश दिखाया गया है।

एलिफेंटा की गुफाओं की वास्तुसंकल्पना भगवान शिव की पवित्र उपस्थिति का भान कराती है। प्रवेश करने पर पहला फलक नृत्य के देवता नटराज का है और दूसरा शिव को ही ध्यान-मुद्रा में दर्शाता है। ये प्रतिमाएँ विशाल एवं भव्य हैं। नटराज की आठ भुजाओं में से केवल दो भुजाएं-फरसा व सर्प लिए-दृष्टिगोचर हैं।

इसी तक्षित शिल्प फलक में भगवान गणेश एवं भृंगी ऋषि, जिन्होंने भगवान शिव के साथ नृत्य किया, दर्शाए गए हैं। ब्रह्मा, विष्णु तथा इंद्र के साथ-साथ अन्य देवी-देवता भी प्रदर्शित किए गए हैं।

17. त्रिमूर्ति, एलिफेंटा, महाराष्ट्र

इस चित्र में जो मूर्ति दिखाई दे रही है, वह अपने स्थान, आकार और अपने अर्थ के कारण एलिफेंटा की समस्त मूर्तियों में अपना एक विशेष महत्व रखती है। इसे सदाशिव, महेश्वर या महेशमूर्ति भी कहा जाता है। यह तीन मुखों वाली मूर्ति भगवान शिव के विभिन्न रूपों को दर्शाती है। बाईं तरफ की मूर्ति में उनके नेत्र खुले हैं एवं उनकी मूँछें दर्शायी गयी हैं। यह उनका भैरव-रूप है। मध्य की मूर्ति में वे भव्य, सौम्यता लिए हुए शांति का प्रसार-सा कर रहे हैं। दायीं तरफ नारी का रूप है। इस त्रिमूर्ति से जगत में व्याप्त त्रिगुणों क्रमशः तमोगुण, सतगुण व रजोगुण का अर्थ भी लिया जाता है। कुछ विद्वानों का यह भी मत है कि यद्यपि मूर्ति में तीन मुख ही हैं, पर मूर्तिकार चौथा, यहाँ तक कि पांचवां मुख भी बना सकते थे।

18. सी कैथेड्रल, गोआ

गोआ में पुर्तगाली शासकों के साथ ही उनके ईसाई धर्म के पुजारी भी आए। वे यह मानते थे कि ईसाई धर्म के ज्ञान का विस्तार और आम जनता को ईसाई धर्म के बारे में शिक्षित करना उनका कर्तव्य है। इसी कारण गोआ में अनेक छोटे-बड़े, नए-पुराने चर्च हैं।

गोआ में “सी कैथेड्रल” या संत कैथरिन कैथेड्रल, वहाँ का सबसे बड़ा चर्च है। यह चर्च चूने के पलस्तर से ढके लेटराइट से बने ऊंचे स्थान पर निर्मित है। कैथेड्रल का मुख्य प्रवेशद्वार पूर्वाभिमुखी है। सी कैथेड्रल की वास्तुरचना पुर्तगाली गॉथिक शैली में होते हुए, इसका बाह्य भाग तुस्कनी, जबकि अंदरूनी भाग कोरिन्थियन शैली के स्तंभों से युक्त है।

ऑर्गन दीर्घा में दो धातु-पट्टों पर लातिनी एवं पुर्तगाली भाषा में खुदे एक लेख में बताया गया है कि कैथेड्रल के मुख्य भवन का निर्माण 1562 ईस्वी में प्रारंभ हुआ। सी कैथेड्रल वास्तु-संरचना-योजना में आयातकार है पर आंतरिक रूप से स्वस्तिकाकार।

यह बहुत बड़ा और भव्य कैथेड्रल अपने समय का एक महान स्मारक है।

19. प्रार्थनालय, सी कैथेड्रल, गोआ

सन् 1510 में पुर्तगाली गोआ के समुद्री तट पर पहुँचे और धीरे-धीरे उन्होंने वहाँ की धरती और तट के समानान्तर स्थानों पर आधिपत्य जमाना शुरू किया। वे भारत में अपने साथ यूरोप के पुनर्जागरण काल की स्थापत्य कला भी लाए एवं उन्होंने भव्य चर्चों और भवनों का निर्माण करवाया। क्रूसारोपण के चित्रण के द्वारा मानवीय पीड़ाओं को मुखरित करना भारतीय कलाकारों के लिए एक कठिन चुनौती थी।

प्रस्तुत चित्र में आप चर्च के प्रमुख प्रार्थनालय का एक महत्वपूर्ण हिस्सा देख रहे हैं। यह चर्च सिन्दरिया की संत कैथरीन को समर्पित है। इस के फलक पर प्रचुर मुलम्मा चढ़ा है तथा यह दूसरों के पापों के लिए संत के आत्म-बलिदान को दर्शाता है।

इस ‘सी कैथेड्रल’ का निर्माण सन् 1562 में प्रारंभ हुआ तथा इसके पूरा होने में 75 वर्ष लगे। प्रार्थनालय सन् 1652 में तैयार हो गया था। गोआ के चर्चों एवं कॉन्वेंटों में जिन मूर्तियों का संग्रह है, वे अधिकांशतः महीन रूप से नक्काशी की हुई लकड़ी पर बनायी गयी हैं।

20. फलक, सी कैथेड्रल, गोआ

17वीं शताब्दी में, जबकि अंग्रेज पुर्तगालियों के हाथों से गोआ का अधिकार लेने के लिए प्रयासरत थे; उस समय भी गोवन-आंग्ल कला का निरन्तर विकास होता रहा और इस तथ्य को भी बहुत कम लोग जानते है कि गोआ की स्थापत्य-कला को उन भारतीय कारीगरों ने ही साकार किया था, जो विदेशी कारीगरों एवं वास्तुविदों के साथ काम किया करते थे।

गोआ का ‘सी कैथेड्रल’ ही एकमात्र ऐसा चर्च है, जिस पर भारतीय स्थापत्य-कला का प्रभाव नहीं पड़ा।

‘सी कैथेड्रल’ के प्रार्थनालय का रिटेबल भारत के श्रेष्ठ प्रार्थनालयों के हिस्सों में से एक है। इसे सुंदर ढंग से उत्कीर्ण किया गया है तथा मुलम्मा चढ़ा कर अलंकृत किया गया है। इस पर अंकित दृश्यों में प्रचारकों की आकृतियां, स्तंभ एवं सजावटी प्रतीक हैं। इस रिटेबल में तीन स्तर हैं तथा हर स्तर पर तीन दृश्य। यहाँ ईशा तथा उसके प्रचारकों की आकृति को उकेरा गया है तथा संत कैथरिन के जीवन की घटनाओं के दृश्य दिखाए गए हैं। इस चर्च का नामकरण सेंट कैथरिन के नाम पर ही किया गया था। इस प्रकार देवालय में श्रद्धालुओं को पवित्र आत्मा की अभिव्यक्ति का अनुभव होता है।

21. बसिलिका, बों जेजुश, गोआ

ईसाई समुदाय के लिए चर्च देव गृह एवं पूजा स्थल है।

‘बों जेजुश बसिलिका’ भी स्थानीय रूप से उपलब्ध लाल रंग में रंगे हुए लेटराइट पत्थरों से निर्मित है। काफी पहले इसके अग्रभाग को छोड़कर सारे बाह्य भाग पर चूने का पलस्तर किया गया था, पर कालांतर में यह पलस्तर हटा दिया गया। बसिलिका की छत मूलतः खपरैलों की बनी हुई है। यह अपनी वास्तु-संरचना योजना में क्रूसकार है।

जैसा कि, चित्र में दृष्टिगोचर है—बसिलिका का अग्रभाग तीन मंजिला है। यह पश्चिमाभिमुखी है तथा आयोनिक, डोरिक तथा कोर भित्ति स्तंभों से सुशोभित है। मुख्य प्रवेश द्वार के अगल-बगल में दो और छोटे प्रवेश द्वार हैं। इसके अग्रभाग के शीर्ष पर, जीसस शब्द के यूनानी भाषा के लातिनी में लिखे गए, प्रथम तीन अक्षर आई.एच.एस. उकेरे गए हैं।

बसिलिका के दक्षिणी भाग में उस से सटा एक, एक मंजिला भवन बसिलिका को “प्रॉफेस्ड हाऊस” से जोड़ता है। बों जेजुश बसिलिका की मुख्य वेदिका बों जेजुश अर्थात् “अच्छे जीसस” या “शिशु जीसस” को समर्पित है और यूरोपीय अत्यलंकृत बैरोक शैली में बनाई गई है। अन्य चर्चों की भांति इस बसिलिका में भी एक मुख्य वेदिका तथा बगल की वेदिकाएं हैं, जहाँ प्रार्थना की जाती है।

यहाँ पर संत फ्रांसिस जेवियर का पार्थिव शरीर चांदी की शवपेटिका में रखा है। सदियां बीत जाने पर भी यह विकृत नहीं हुआ है। विश्वभर से लाखों यात्री यहाँ पूजा करने आते हैं। और इस चमत्कार के सम्मुख श्रद्धावश झुक जाते हैं।

22. संत फ्रांसिस जेवियर का पार्थिव शरीर, बसिलिका, बों जेजुश, गोआ

संत फ्रांसिस जेवियर का जन्म 7 अप्रैल, 1506 को हुआ था तथा सन् 1530 में उन्हें पुरोहिताई प्राप्त हुई। तत्पश्चात् उन्होंने अध्यापन कार्य शुरू किया और शीघ्र ही रीजेंट के पद पर आसीन हुए। अपने जीवन का अधिकांश समय उन्होंने दीन-दुखियों की सेवा-सुश्रूषा तथा विश्व के विभिन्न हिस्सों में शिक्षा एवं सत्य के प्रसार में लगाया। वे जेसुइट्स के संस्थापक इनिगो द लॉयला के शिष्य थे तथा उन्होंने विश्वभर में लॉयला शैक्षणिक संस्थानों की एक कड़ी को शुरू किया। 46 वर्ष की अवस्था में सितंबर 1552 को उनका देहावसान हुआ तथा पोप ने 1662 में उन्हें गोआ में संत घोषित किया।

उनकी पार्थिव देह, बसिलिका, बों जेजुश के प्रार्थनालय में रखी है। प्रार्थनालय का आंतरिक भाग प्रचुर रूप से रत्नजड़ित है। चांदी की शवपेटिका, जिस में संत फ्रांसिस जेवियर का पार्थिव-शरीर रखा है, वास्तव में इतालवी व भारतीय कला का सुंदर नमूना है। यह बेहतरीन ढंग से उत्कीर्ण है तथा कभी इसमें रत्न जड़े थे। इसकी हर तरफ 7 फलकों में विभाजित है तथा ऊपर पवित्र क्रॉस है। हर दस वर्ष के बाद उनकी बरसी पर उनका पार्थिव शरीर आम जनता के दर्शनार्थ रखा जाता है।

23. संत फ्रांसिस असीसी का चर्च, गोआ

संत फ्रांसिस असीसी के कोनवन्ट और चर्च आर्चबिशप के भूतपूर्व महल के मार्फत सी कैथेड्रल से जुड़े हैं। चर्च की इमारत लेटराइट पत्थर से बनी है और उस पर चूने का पलस्तर किया गया है। चर्च पश्चिमाभिमुखी है। चर्च में प्रवेश करने के बाद दोनों तरफ तीन-तीन प्रार्थनालय, वृंदगान के लिए स्थान, दो वेदिकाएं एवं एक मुख्य वेदिका है।

चर्च की इमारत से जुड़े कोन्वेंट में एक पुरातात्विक संग्राहलय है। चर्च की मुख्य वेदिका के मंडप के ऊपर यूरोपीय अत्यलंकृत बैरोक शैली में संत फ्रांसिस असीसी की दो बड़ी मूर्तियाँ तथा सुली पर ईसा मसीह की मूर्ति बनायी गई है। इन मूर्तियों के नीचे संत फ्रांसिस असीसी की तीन शपथ-निर्धनता, नम्रता तथा आज्ञाकारिता अंकित हैं।

24. संत केजेतान का चर्च, गोआ

भारत में पुर्तगालियों द्वारा उनके पूर्वी साम्राज्य की राजधानी-गोआ में भव्य चर्च निर्मित किए गए थे।

संत केजेतान का विशाल तथा सुंदर चर्च सी कैथेड्रल की दूसरी तरफ स्थित है। यह चर्च भी लेटराइट पत्थर का बना है तथा इस पर भी चूने का पलस्तर किया गया है। चर्च की मुख्य वेदिका अर्बेर लेडी ऑफ डिवाइन प्रोविडेंस को समर्पित है। यहाँ यूरोपीय अत्यलंकृत बैरोक शैली में छः और वेदिकाएं हैं जिन पर स्वर्ण का मुलम्मा चढ़ा है तथा इन वेदिकाओं पर मुख्य रूप से देवदूतों की आकृतियाँ हैं। इन पर संत केजेतान के जीवन को दर्शाने वाले दृश्य भी चित्रित किए गए हैं।

17वीं शताब्दी में निर्मित इस चर्च को रोम के संत पीटर चर्च के मूल डिजाइन के आधार पर बनाया गया है।

विश्व सांस्कृतिक सम्पदा-भारत

World Cultural Heritage Sites-India

3

1. Exterior View, Ajanta Caves, Aurangabad, Maharashtra

Ajanta is famous for its monasteries and cave temples. In the horseshoe shaped curved hillside above the Waghora river, there are about 30 caves and many of them are major achievements in the arts of sculpture and painting.

The cave monastery excavation occurred under the Vakataka rulers who had marital relations with the Gupta dynasty. The Vakataka king, Harisena's minister and some of his feudatory princes lavishly provided money and the means for the *sangha*.

2. Bodhisattva Padmapani, Cave No 1, Ajanta, Aurangabad, Maharashtra

Cave No. 1 is a fine *vihara* with exquisitely carved pillars. The four incidents of Buddha's life which turned the mind of Siddharta from worldly pleasures to spiritual thought have been sculpted on the facade of the cave.

The cave also has several large paintings. This figure of Bodhisattva Padmapani in Cave No. 1 is one of the finest examples. Its graceful pose, refined expression and pleasing colours at once capture the attention of the visitor. In this figure the artist has represented gentleness and a kind of divine innocence. He is shown delicately holding the fragile blue lotus. His eyes have been shown half-closed giving an impression of meditation.

According to Buddhist scriptures, Padmapani has been performing the duty of the Buddha since the disappearance of Gautama, and he will continue to do so till Maitreya, another incarnation of Buddha descends on earth.

3. Bodhisattva Avalokitesvara, Cave No. 1, Ajanta, Aurangabad, Maharashtra

The Ajanta caves are a documentation of Buddhist art. The patrons together with the sculptors and painter present a high quality of Indian art.

Cave No. 1 at Ajanta has some of the best preserved paintings including the two Bodhisattvas, Padmapani and Avalokitesvara. The painting at Ajanta is somewhat similar to the tempera technique.

In all the painted panels, as in the sculptures, the Buddha and the Bodhisattvas occupy an important place.

In the picture, we see the detail of the towering figure of Bodhisattva Avalokitesvara. His serene facial expression suggests inner bliss.

The bejewelled body and the grand crown studded with precious stones are awe-inspiring and express spiritual richness and glory.

4. Seated Buddha, Cave No. 1, Ajanta, Aurangabad, Maharashtra

The beautiful paintings at Ajanta have sometimes diverted the scholar's attention from its sculptural wealth. The artists present a perfect rhythm and harmony of architecture, sculptures and paintings to the visitor at Ajanta caves. The art of sculpture is broadly divided into two phases-the Hinayana and the Mahayana.

The sanctum of Cave No. 1 contains the seated figure of Buddha. His cross-legged *padmasana* posture and the *dharma chakra pravartana mudra*, the kneeling five disciples and the wheel flanked by deers symbolises Buddha's first sermon, after attaining enlightenment, at the deer park, Sarnath near Varanasi. The two figures behind the main figure of Buddha add to the sculptural compositions of the sanctum, which was also fully painted.

In addition to walls and ceilings, most of the portions of the caves were painted including sculptures, door frames and pillars.

5. Facade, Cave No. 16, Ajanta, Aurangabad, Maharashtra

All the caves at Ajanta can be divided into two categories on the basis of their design-the *chaitya griha* and the *viharas*.

As one enters the Cave No. 19, one can see a beautiful *chaitya griha* with the votive stupa at the far end. The *chaitya grihas* are halls of worship having large, rectangular chambers, separated by rows of pillars into a central nave. It has a sanctuary opposite the entrance. The sanctuary contains a votive image. The pillars are elaborately carved. The facade of the cave, as seen in the picture, has a lovely portico and a large dominating chaitya window. The decoration at the upper level of the opening with its beautifully carved crest above the window is in the form of a fully developed *chandrasala* seen frequently on Gupta temples. The attendants flanking the arched window are symmetrically placed. Outside Cave No. 19 is a particularly appealing piece of sculpture representing the Naga king and his consort which is not seen in this picture.

6. Interior, Parinirvana, Cave No 26, Ajanta, Aurangabad, Maharashtra

The sculptures and carvings at Ajanta are equally remarkable as paintings and present some of the finest examples of the art of that period.

Cave No. 26 is a *Chaitya Griha* of the later phase of Vakataka art.

The most impressive sculpture at the site and a rare one too is the reclining figure showing the Buddha's great demise *Parinirvana*. This sculpture extends more than seven metres along the left side wall of the *pradakshinapatha*. It leaves a profound effect on the visitor philosophically and artistically. The sculpture is surrounded by mourners and his disciples at the lower level and celestial beings at the higher level, who have come to pay their respects to the Lord.

7. Kailasanatha Temple, Ellora, Aurangabad, Maharashtra

The *Rashtrakutas* conquered the Deccan from the Early Western Chalukyas in the 8th century. There are many sites at which the art of *Rashtrakutas* can be seen but the principal site associated with them is at Ellora. Here is one of the greatest combinations of architectural and engineering feats of that bygone era—the rock cut temple which was built under Krishna I known as the Kailasanatha temple. In this temple, the architect began work from the top and the sides unlike the structural temples which are built up from the foundation at the ground level. The architect envisaged the plan in minute detail and then cut away the rock piece by piece removing exactly what was not required in his design. The entrance to the *garbha-griha* of the Kailasanatha temple is flanked by large figures, now headless, of the river goddesses *Ganga* and *Yamuna*.

Though the Kailasanatha temple at Ellora is bigger in size but the design is similar to the Kailasanatha temple at Kanchipuram in Tamil Nadu and the Virupaksha temple in Karnataka.

8. Relief sculpture, Ramayana, Kailasanatha Temple, Ellora, Aurangabad, Maharashtra

The Kailasanatha temple was constructed by sinking two parallel trenches on the north and south directions of the sloping hill. There is another trench on the eastern side and the temple faces the west. The left side of the main entrance shows dominance of Shaivite sculptures, while the sculptures on the right are mostly Vaishnavite. The front side of the temple and the back of the *Vimana* have carvings on the walls. The sculptural reliefs on the south side show episodes from the *Ramayana* and those on the northern side depict stories from the *Mahabharata*.

The narrative sculptural reliefs in temples are a store-house of visual information on Indian myths and legends. In this picture, one sees a panel showing details of episodes from the *Ramayana*.

9. Ravana shaking Mount Kailasa, Ellora, Aurangabad, Maharashtra

The Kailasanatha temple is a complete complex with all the essential elements of a temple including the gateway, main building and the shrine. It also has subsidiary shrines in which mythological figures are carved into the rock.

A very popular sculptural relief here shows the multi-armed, multi-headed demon Ravana shaking the Mount Kailasa. On the upper level of the sculpture, Siva is shown seated with Parvati who is leaning towards him in fear.

The sculpture symbolises an expression of faith in the greatness of Gods who can suppress evil, no matter how strong. The theme of this story is repeated several times at Ellora and in a number of other Hindu cave temples. This relief is located under the porch of the south side of the *mandapam*. The relief has three-dimensional carved details which create an highly dramatic effect.

10. Seated Buddha, Cave No. 10, Ellora, Aurangabad, Maharashtra

All the thirty-four caves at Ellora, whether Buddhist, Hindu or Jain, contain exquisite examples of architectural and sculptural work.

Cave No. 10 is a *Chaitya*. Also known as Vishvakarma cave, this cave has some of the most beautiful carved sculptures. In the *chaitya* hall, Lord Buddha is shown seated flanked by bodhisattvas on either side and with adoring celestials above. The ribbed roof reminds the visitor of ancient wooden architecture. The three bands of friezes immediately above the columns show repeated panels of Buddha. The trefoil window of this cave is an imposing architectural feature and offers a beautiful view of the *chaitya*. The facade of the cave has sculptures on three sides.

11. Manushi Buddhas, Cave No. 12, Ellora, Aurangabad, Maharashtra

There are thirty-four caves at Ellora out of which cave Nos. 1 to 12 are Buddhist caves. In these caves, the sculptor has been able to capture the subtlety, refinement and an expression of peace and tranquility in the statue of the Buddha.

These caves differ in size and structure from the others. For example, a double row of stone benches extending almost the full length of the hall is a key feature in the Cave No. 6. Cave No. 12 also known as Teen Tala is a combination of the *chaitya* and the *vihara*. Its facade does not have any decoration whereas the interiors are full of free standing and relief sculptures. An interesting feature in this cave is the presence of the mortal Buddhas, in human form, such as Sakyamuni known as Manushi Buddhas.

This picture shows a sculpture of the Buddha and a row of Manushi Buddhas.

12. Exterior view, Cave No. 32, Ellora, Aurangabad, Maharashtra

The Jaina group of caves at Ellora are situated at a distance from the other caves. Our of a total of thirty-four caves in the complex there are five Jaina caves from Cave No. 30 to 34. Three caves are considered significant because of their richly carved details and polished finish.

Cave No. 32, popularly known as *Indra Sabha* is the finest and most elaborate in all respects of the Jaina group of caves at Ellora.

Its monolithic tower or *Vimana* suggests the features of the Dravidian style, similar to that of Kailasanatha. The pillar is an emblem crowned and is an irregular rectangular at the base. The shrine is also made on high platform like Kailasanatha Temple (Cave No. 16). An interesting carving is a beautiful lotus on the shrine.

13. Bahubali, Cave No. 32, Ellora, Aurangabad, Maharashtra

The Cave No. 32, popularly known as *Indra Sabha* is the most beautiful of the Jaina caves at Ellora. The ground floor has a doorway leading to the courtyard.

The shrine on the ground floor contains the figure of *Vardhamana* Mahavira. The first floor has richly carved sculptures, highly decorated pillars and painted ceiling. The shrine on the first floor also has the seated figure of the Mahavira.

The back wall of the shrine has two important Jaina figures. The left of the shrine has a huge figure of Parsvanatha and on the right, the famous figure of Bahubali. Bahubali is shown standing on a full bloom lotus as if to fulfill a vow. He is surrounded by a thick growth of vegetation, his sisters, celestial figures holding garlands, wild animals, deer, serpents and scorpions. Many stories from Jain mythology such as Kamatha's attack, adoration of Parsvanatha have been carved on the walls of the cave.

In the Jaina caves at Ellora, twenty-four saints of Jainism known as *Tirthankaras* are found adorning the Jaina caves.

14. Exterior view, Elephanta Caves, Elephanta Island, Maharashtra

The Elephanta caves rank among the most impressive of South Asian rock cut architecture because of its size, scale, sculptural and architectural conception. It has been carved out of the western hill of the island at an elevation of more than 250 feet above the high water level. It is hewn out of the hard compact rock trap.

The pillars and relief sculptures are gigantic in scale and the architectural design gives the feeling of openness. The pillars are beautifully shaped and have bulbous cushion capitals (*amla*) which can also be seen at the Ajanta caves.

While studying cave art and architecture, one finds common features in cave temples of western India at Bagh, Ajanta, Ellora and Elephanta, such as door frames, designs of pillars etc.

15. Shrine in Siva Cave, Elephanta Island, Maharashtra

The main entrance to the Elephanta Cave faces north, although according to religious norms, the Hindu temple usually faces the east. The cave has also been cut away on either side, leaving open areas which offer entry from the east and west sides also. The interior of the cave has about ten sculptural panels of legends associated with Siva. The main shrine is 130 feet wide which has six rows of columns and each row again having six columns.

There is also a small square temple inside the central hall for the *Linga*. Its doors are flanked by large *dwarapalas*. The *dwarapalas* were damaged when the Portuguese army, in the process of occupying the island, fired cannon balls. The open space surrounding the shrine is used as a circumambulatory passage.

16. Nataraja, detail Elephanta Island, Maharashtra

As you can see, the sculpture shown in this picture is damaged. It is a detail of a large sculptural relief.

The architectural conception at Elephanta invokes the divine presence of Siva. On entering, the first panel is of *Nataraja*, the Lord of Dance and the second shows Siva in meditation. These sculptures are huge and very impressive. The *Nataraja* has eight arms of which two can be seen in this picture holding the axe and the snake.

In the same sculptural relief, Lord Ganesha, and the sage Bhringi,

who dances with Siva, can be seen at the site. Apart from Brahma, Vishnu and Indra, other divine figures have also been depicted in the panel.

17. Trimurti, Elephanta Island, Maharashtra

Considering the placement, size and its interpretation, the sculpture which is seen in this picture is, by far the most magnificent sculpture of all the images at Elephanta. It is also referred to as *Sadashiva*, *Maheshwara* or *Maheshamurti*. This three-headed figure shows different manifestations of the Lord Siva, on the left he is seen with fully open eyes and is wearing a moustache, this is his Bhairava aspect. In the centre, you can see Siva in his benign form emanating peace and tranquility; and on the right, the feminine Parvati. This Trimurti sculpture is interpreted as the three fundamental qualities present in the Universe—the *Tamas*, the *Salva* and the *Rajas* respectively. Some scholars are of the view that although only three faces are shown in the sculpture, the fourth and even a fifth might have been envisaged by the sculptors.

18. Sé Cathedral, Goa

With the coming of the Portuguese rulers, there came to Goa the priests of their religion. Christians believed it was their duty to spread the knowledge of their religion and also to educate people. There are scores of churches, big and small, ancient and new all over Goa.

The Sé Cathedral or Cathedral of St. Catherine is the largest of the churches in Old Goa. The Cathedral is built on a raised plinth of laterite covered over with lime plaster. The main entrance faces east. Architecturally, in Portuguese Gothic style, the exterior of the building is Tuscan and the interior Corinthian. A Latin inscription on a pediment in the Cathedral records that the construction of the main building started in 1562 A.D. The building is oblong in plan but has a cruciform layout in the interior.

The massive and imposing Sé Cathedral is one of the finest monuments of its period.

19. Altar, Se Cathedral, Goa

In 1510 A.D., the Portuguese landed on the shores of Goa. They settled and extended their rule inland and along the coast. The Portuguese brought to India the art, architecture of the European Renaissance period and constructed beautiful churches and buildings.

The depiction of the Crucifixion to express human pain and suffering was a challenge to Indian artists. In this picture, one sees the main altar which is dedicated to St. Catherine of Alexandria. The panel is richly gilded and shows the martyrdom of the Saint who, in all humility died for the sins of others.

The construction of the Cathedral was started in 1562 A.D. and took around seventy-five years to complete. The altars were completed in 1652 A.D. Most of the sculptures in churches and convents of Goa are carved delicately in wood.

20. Retable, detail, Se Cathedral, Goa

It is interesting to note that Goan-Christian art flourished in the 17th century at a time when the British were in the process of taking over Goa from the Portuguese. It is a lesser known fact that the art and architecture of Goa was mostly executed by Indian artisans who were learning about Christian art by working with foreign master craftsmen and architects.

The Sé Cathedral is the first Church built in Goa in which one does not find any influence of Indian architecture.

The retable of the main altar of the Sé Cathedral is one of the best altar pieces in India. It is exquisitely carved, gilt and ornamented with scenes showing figures of apostles, pillars and decorative motifs. The retable is three-storeyed with three scenes in each storey. There is a bas-relief of Jesus with his apostles and there are scenes depicting episodes from the life of St. Catherine after whom the Cathedral is named. So, in the House of the "Body of God", the soul of the worshipper finds the manifestations of the Holy Spirit.

21. Basilica of Bom Jesus, Goa

The Church is the house of God and place of worship for the Christian community. The Basilica of Bom Jesus is also built out of blocks of the locally available red tinted laterite stone. Its exterior, excepting the facade which was once lime plastered was subsequently removed. The roof of the Basilica was originally tiled. The Basilica is cruciform on plan.

As seen in the picture, the Basilica has a three storeyed facade. It faces west and shows Ionic, Doric and Corinthian orders. The main entrance is flanked by two smaller entrances. The first three letters of Jesus in Greek 'IHS' have been carved on its facade.

A single storeyed structure adjacent to the Church on its southern wing connects it with the Professed House.

The Basilica is called 'Bom Jesus' meaning 'God Jesus' or 'Infant Jesus' to whom it is dedicated. In this church like other churches, there is a main altar and side altars where prayers are offered.

The mortal remains of Saint Francis Xavier, are kept in a silver casket in this Basilica. Through the centuries, the body of the great saint has not decomposed. Christians from all over the world come to worship and offer prayers and bow down in reverence before this miracle.

22. Holy Relics of St. Francis Xavler, Basilica of Bom Jesus, Goa

St. Francis Xavier was born on April 7, 1506. In 1530 A.D., he received the Priesthood. He started teaching and soon rose to the position of a Regent. He spent most of his life nursing the sick and spreading the gospel of truth in different parts of the world. He was a student of Inigo de Loyola, founder of the Jesuits and started a chain of Loyola educational institutes all over the world. He died in September 1552 at the age of forty-six and was declared Saint by the Pope in 1662 A.D. in Goa.

The sacred body of St. Francis Xavier is kept in the Chapel of Basilica of the Bom Jesus, the interior of which is richly ornamented.

The silver casket, a fine example of Italian and Indian art is a reliquary containing the sacred body of St. Francis Xavier. The Casket is exquisitely carved and was once studded with precious stones. It is divided into seven panels on each side and there is a cross on top. Every ten years, on the anniversary of the Saint's death, the holy relics of the body of St. Francis Xavier are displayed to the public.

23. The Church of St. Francis of Assisi, Goa

The Convent and Church of St. Francis of Assisi is connected to the Sé Cathedral through the former palace of the Archbishop. The building is built of laterite blocks and is lime-plastered. The Church faces west and the nave has three chapels on either side, a choir, two altars in the transept and a main altar. The Convent, an annexe to the church, houses the Archaeological Museum.

The main altar of the Church is in Baroque style with Corinthian features. In the main altar, above the tabernacle, are two large statues of St. Francis of Assisi and Jesus on the Cross. The three vows of the Saint—poverty, humility and obedience have been inscribed beneath the two figures.

24. The Church of St. Cajetan, Goa

The greatest churches of the Portuguese in India were built in Goa, the capital of their eastern dominions.

This large and beautiful church of St. Cajetan is standing opposite to the Sé Cathedral. The church is built of lime-plastered laterite blocks. The main altar of the church is dedicated to Our Lady of Divine Providence. There are six other altars which are profusely carved and gilt in Baroque style with twisted shafts and figures of angels dominating in each. There are scenes, painted on canvas depicting the life of St. Cajetan in the altar.

The Church was built in the 17th century and is modelled on the original design of St. Peter's Church in Rome.



विश्व सांस्कृतिक सम्पदा-भारत World Cultural Heritage Sites-India

3

1. अजंता की गुफाओं का दृश्य, औरंगाबाद, महाराष्ट्र

अजंता अपने मठों और गुफा-मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है। वघोरा नदी के ऊपर घोड़े की नाल के आकार की चट्टान को कारीगरों ने तराशा। यहां लगभग 30 गुफाएं हैं और उन में से बहुत सी वास्तुकला, मूर्तिकला और चित्रकला के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धियां हैं। इन गुफाओं को वाकाटक शासकों के काल में तराशा गया, जिनके गुप्त वंश के साथ वैवाहिक संबंध थे।

वाकाटक शासक हरिषेण के मंत्री और कुछ अन्य जागीरदारों ने दिल खोल कर बौद्ध भिक्षुओं एवं कलाकारों के संघ को आर्थिक सहायता एवं चीजें उपलब्ध करवायीं।



1. Exterior View, Ajanta Caves, Aurangabad, Maharashtra

Ajanta is famous for its monasteries and cave temples. In the horseshoe shaped curved hillside above the Waghora river, there are about 30 caves and many of them are major achievements in the arts of sculpture and painting.

The cave monastery excavation occurred under the Vakataka rulers who had marital relations with the Gupta dynasty. The Vakataka king, Harisena's minister and some of his feudatory princes lavishly provided money and the means for the *sangha*.



विश्व सांस्कृतिक सम्पदा-भारत World Cultural Heritage Sites-India

3

2. बोधिसत्व पद्मपाणि, गुफा नं. 1, अजंता, औरंगाबाद, महाराष्ट्र

अजंता की गुफा नं. 1, उत्तम विहार है तथा इसके स्तंभ सुंदर ढंग से उत्कीर्ण हैं। गुफा के अग्रभाग में सिद्धार्थ के जीवन की उन चार महत्वपूर्ण घटनाओं को एक फलक पर उत्कीर्ण किया गया है, जिन्होंने उनके मन को भौतिक सुखों से हटा कर आध्यात्मिक ज्ञान की तरफ मोड़ दिया था।

गुफा नं. 1 की यह बोधिसत्व पद्मपाणि की आकृति चित्रकला का एक अनुपम उदाहरण है। भव्य मुद्रा, नपी-तुली भाव भंगिमा तथा सुहावने रंग सभी मिल कर क्षण भर में दर्शकों का ध्यान आकर्षित कर लेते हैं।

इस आकृति में चित्रकार ने बोधिसत्व पद्मपाणि के चेहरे पर सरलता व दैवीय अबोध को साकार किया है। उन्होंने नीले कमल के फूल को बड़ी कोमलता से पकड़ रखा है। साथ ही अधमुँदे नेत्रों को दिखा कर कलाकारों ने ध्यान-मुद्रा का प्रभाव उत्पन्न किया है।

बौद्ध-धर्म ग्रंथों के अनुसार पद्मपाणि, गौतम के अदृश्य हो जाने के पश्चात् भगवान बुद्ध के कर्तव्यों को निभा रहे हैं और वे तब तक ऐसा करते रहेंगे, जब तक कि “मैत्रेय” के रूप में वे पृथ्वी पर पुनः अवतरित नहीं हो जाते।



2. Bodhisattva Padmapani, Cave No 1, Ajanta, Aurangabad, Maharashtra

Cave No. 1 is a fine *vihara* with exquisitely carved pillars. The four incidents of Buddha's life which turned the mind of Siddharta from worldly pleasures to spiritual thought have been sculpted on the facade of the cave.

The cave also has several large paintings. This figure of Bodhisattva Padmapani in Cave No. 1 is one of the finest examples. Its graceful pose, refined expression and pleasing colours at once capture the attention of the visitor. In this figure the artist has represented gentleness and a kind of divine innocence. He is shown delicately holding the fragile blue lotus. His eyes have been shown half-closed giving an impression of meditation.

According to Buddhist scriptures, Padmapani has been performing the duty of the Buddha since the disappearance of Gautama, and he will continue to do so till Maitreya, another incarnation of Buddha descends on earth.



विश्व सांस्कृतिक सम्पदा-भारत

World Cultural Heritage Sites-India

3

3. बोधिसत्व अवलोकितेश्वर, गुफा नं. 1, अजंता, औरंगाबाद, महाराष्ट्र

अजंता की गुफाएं बौद्धकला का एक प्रलेखन हैं। मूर्तिकारों, चित्रकारों और संरक्षकों-सभी ने मिलकर भारतीय कला के एक सुंदर रूप को प्रस्तुत किया है।

अजंता की गुफा नं. 1 में सुंदर भित्तिचित्रों को सुरक्षित रखा गया है। उनमें बोधिसत्व पद्मपाणि और अवलोकितेश्वर के चित्र भी हैं। अजंता के ये भित्तिचित्र लगभग टेम्परा तकनीक से बनाए गए हैं।

मूर्तियों की भांति चित्रित फलकों में भी महात्मा बुद्ध और बोधिसत्व का स्थान महत्वपूर्ण है।

इस चित्र में आप बोधिसत्व अवलोकितेश्वर की आकृति की बारीकियों का अवलोकन कर सकते हैं। उनके चेहरे के पवित्र भाव आंतरिक अलौकिक आनंद को प्रकट कर रहे हैं। रत्नाभूषित शरीर और रत्नजड़ित मुकुट प्रेरणादायक हैं; साथ ही, आध्यात्मिक समृद्धि और तेज को प्रदर्शित करते हैं।

आज संरक्षकों का मुख्य दायित्व इन भित्ति चित्रों को सुरक्षित रखने का है।



3. Bodhisattva Avalokitesvara, Cave No. 1, Ajanta, Aurangabad, Maharashtra

The Ajanta caves are a documentation of Buddhist art. The patrons together with the sculptors and painter present a high quality of Indian art.

Cave No. 1 at Ajanta has some of the best preserved paintings including the two Bodhisattvas, Padmapani and Avalokitesvara. The painting at Ajanta is somewhat similar to the tempera technique.

In all the painted panels, as in the sculptures, the Buddha and the Bodhisattvas occupy an important place.

In the picture, we see the detail of the towering figure of Bodhisattva Avalokitesvara. His serene facial expression suggests inner bliss.

The bejewelled body and the grand crown studded with precious stones are awe-inspiring and express spiritual richness and glory.



विश्व सांस्कृतिक सम्पदा-भारत World Cultural Heritage Sites-India

3

4. भगवान बुद्ध की पद्मासन मुद्रा, गुफा नं. 1, अजंता, औरंगाबाद, महाराष्ट्र

अजंता के भव्य भित्तिचित्रों ने अनेक बार विद्वानों का ध्यान, अजंता की मूर्तिकला के वैभव से हटा कर अपनी ओर आकर्षित किया है।

यहाँ आने वाले दर्शकों के समक्ष कलाकारों ने वास्तुकला, मूर्तिकला एवं चित्रकला की पूर्णतः समन्वित एवं लयात्मक तस्वीर प्रस्तुत की है। मोटे तौर पर बौद्ध कला के प्रारंभिक स्वरूप को “हीनयान” और “महायान” पक्षों में विभाजित किया गया है।

गुफा नं. 1 के मंदिर गर्भ में बैठे हुए भगवान बुद्ध की आकृति है। इस चित्र में दर्शाई गई उन की पद्मासन की स्थिति, धर्म चक्र प्रवर्तन मुद्रा, सादर झुके हुए पांच शिष्य तथा चक्र के दोनों तरफ हिरण, ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात् वाराणसी के निकट सारनाथ के हिरण पार्क में भगवान बुद्ध के पहले उपदेश के प्रतीक हैं।

भगवान बुद्ध की मुख्य आकृति के बगल की दो आकृतियों ने मंदिर-गर्भ की स्थापत्य-कला को समृद्ध किया है।

दीवारों और छत के साथ-साथ गुफा के अधिकांश भागों को चित्रित किया गया था, जिनमें मूर्तियाँ, दरवाजों की चौखट और स्तंभ भी शामिल हैं।



4. Seated Buddha, Cave No. 1, Ajanta, Aurangabad, Maharashtra

The beautiful paintings at Ajanta have sometimes diverted the scholar's attention from its sculptural wealth. The artists present a perfect rhythm and harmony of architecture, sculptures and paintings to the visitor at Ajanta caves. The art of sculpture is broadly divided into two phases-the Hinayana and the Mahayana.

The sanctum of Cave No. 1 contains the seated figure of Buddha. His cross-legged *padmasana* posture and the *dharma chakra pravartana mudra*, the kneeling five disciples and the wheel flanked by deers symbolises Buddha's first sermon, after attaining enlightenment, at the deer park, Sarnath near Varanasi. The two figures behind the main figure of Buddha add to the sculptural compositions of the sanctum, which was also fully painted.

In addition to walls and ceilings, most of the portions of the caves were painted including sculptures, door frames and pillars.



विश्व सांस्कृतिक सम्पदा-भारत

World Cultural Heritage Sites-India

3

5. अग्रभाग, गुफा नं. 19, अजंता, औरंगाबाद, महाराष्ट्र

अजंता की सभी गुफाओं को उनकी डिज़ाइन के आधार पर दो श्रेणियों-चैत्यगृह और विहार-में विभाजित किया जा सकता है।

गुफा नं. 19 वास्तव में एक सुंदर चैत्यगृह है, जिसमें प्रवेश करने पर आखिरी सिरे पर वैकल्पिक स्तूप दिखाई देता है। वास्तविक रूप में चैत्यगृह एक आयताकार पूजा-कक्ष है। स्तंभों की कतारें इसे विभाजित करती हैं। प्रवेश-द्वार के सामने दूसरी तरफ पूजा-स्थल होता है। वहां भी अक्सर एक प्रतिमा होती है। गुफा नं. 19 के स्तंभ सुंदर ढंग से उत्कीर्ण किए गए हैं।

जैसा कि, प्रस्तुत चित्र में दृष्टिगोचर है-गुफा के अग्रभाग में एक सुंदर द्वारमण्डप है और प्रवेश द्वार के ऊपर एक विशाल प्रभावशाली चैत्यखिड़की। प्रवेश-द्वार के ऊपरी स्तर पर सजावट और खिड़की के ऊपर का सुंदरतापूर्वक उत्कीर्ण किया गया शिरोभाग चंद्रशाला की तरह है, जो गुप्तकालीन मंदिरों की सजावट में दिखाई देता है। इस चैत्यखिड़की के दोनों तरफ खड़े सेवक अत्यंत सुव्यवस्थित हैं।

इस गुफा के बाहर भी मूर्तिकला का एक नमूना है, जिसमें नागराज अपनी अर्द्धांगिनी के साथ उत्कीर्ण हैं। मूर्तिकला का यह नमूना इस चित्र में दृष्टिगोचर नहीं है।



5. Facade, Cave No. 16, Ajanta, Aurangabad, Maharashtra

All the caves at Ajanta can be divided into two categories on the basis of their design-the *chaitya griha* and the *viharas*.

As one enters the Cave No. 19, one can see a beautiful *chaitya griha* with the votive stupa at the far end. The *chaitya grihas* are halls of worship having large, rectangular chambers, separated by rows of pillars into a central nave. It has a sanctuary opposite the entrance. The sanctuary contains a votive image. The pillars are elaborately carved. The facade of the cave, as seen in the picture, has a lovely portico and a large dominating chaitya window. The decoration at the upper level of the opening with its beautifully carved crest above the window is in the form of a fully developed *chandrasala* seen frequently on Gupta temples. The attendants flanking the arched window are symmetrically placed. Outside Cave No. 19 is a particularly appealing piece of sculpture representing the Naga king and his consort which is not seen in this picture.



विश्व सांस्कृतिक सम्पदा-भारत

World Cultural Heritage Sites-India

3

6. आंतरिक भाग, परिनिर्वाण, गुफा नं. 26, अजंता, औरंगाबाद, महाराष्ट्र

अजंता की गुफाओं की मूर्तियाँ और उत्कीर्ण डिजाइन भी उतने ही सुंदर हैं, जितने वहां के भित्ति-चित्र तथा ये सब उस काल की कला के सुंदर एवं अनुपम उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

यह गुफा उत्तरकालीन वाकाटक कला का चैत्यगृह है। इस गुफा में भगवान बुद्ध की परिनिर्वाण अवस्था का मूर्ति-शिल्प अत्यंत प्रभावशाली एवं बेजोड़ है।

यह मूर्ति-शिल्प प्रदक्षिणापथ की बायीं दीवार पर लगभग सात मीटर तक उत्कीर्ण है। आने वाले दर्शकों पर यह मूर्ति-शिल्प गहरा दार्शनिक व कलात्मक प्रभाव डालता है। मूर्ति-शिल्प के निचले स्तर पर भगवान बुद्ध की परिनिर्वाण अवस्था से शोकाकुल लोगों और उनके शिष्यों को दिखाया गया है एवं साथ में ऊपरी स्तर पर दैवीय शक्तियों को भी श्रद्धांजलि देते दर्शाया गया है।



6. Interior, Parinirvana, Cave No 26, Ajanta, Aurangabad, Maharashtra

The sculptures and carvings at Ajanta are equally remarkable as paintings and present some of the finest examples of the art of that period.

Cave No. 26 is a *Chaitya Griha* of the later phase of Vakataka art.

The most impressive sculpture at the site and a rare one too is the reclining figure showing the Buddha's great demise *Parinirvana*. This sculpture extends more than seven metres along the left side wall of the *pradakshinapatha*. It leaves a profound effect on the visitor philosophically and artistically. The sculpture is surrounded by mourners and his disciples at the lower level and celestial beings at the higher level, who have come to pay their respects to the Lord.



विश्व सांस्कृतिक सम्पदा-भारत

World Cultural Heritage Sites-India

3

7. कैलाशनाथ मंदिर, एलोरा, औरंगाबाद, महाराष्ट्र

8 वीं शताब्दी में राष्ट्रकूटों ने पश्चिमी चालुक्य वंश के प्रारंभिक शासकों पर दक्कन में विजय पाई थी। वैसे तो अनेक स्थानों पर राष्ट्रकूटों की कला के नमूने देखे जा सकते हैं, मगर इनकी कला का मुख्य स्थान एलोरा है। यहाँ पर उस काल की वास्तुकला व इंजीनियरी तकनीकों के अद्भुत सम्मिश्रण से बना एक गुहा-मंदिर स्थित है। शिलाओं का उत्खनन कर बनाए गए इस मंदिर का निर्माण कृष्ण (प्रथम) ने करवाया था। आज यह कैलाशनाथ मंदिर के नाम से विख्यात है। इसके निर्माण में वास्तुकारों ने परंपरा से विपरीत ढंग अर्थात् पहले नीचे के बजाए, ऊपर से नीचे की ओर निर्माण-कार्य शुरू किया।

वास्तुकारों ने बड़ी ही सूक्ष्मता से कार्य-योजना बनाई और चट्टानों को तराश कर कार्य-योजना-अनुसार रूप दिया। मंदिर के गर्भगृह के प्रवेश द्वार के दोनों तरफ गंगा नदी और यमुना नदी की देवियों की विशालकाय प्रतिमाएं हैं। आज भी इनके भग्नावशेष वहाँ देखे जा सकते हैं।

यद्यपि एलोरा का कैलाशनाथ मंदिर आकार में बड़ा है, मगर इसकी डिज़ाइन तमिलनाडु में कांचीपुरम् के कैलाशनाथ मंदिर और कर्नाटक के विरूपाक्ष मंदिर जैसी है।



7. Kailasanatha Temple, Ellora, Aurangabad, Maharashtra

The *Rashtrakutas* conquered the Deccan from the Early Western Chalukyas in the 8th century. There are many sites at which the art of *Rashtrakutas* can be seen but the principal site associated with them is at Ellora. Here is one of the greatest combinations of architectural and engineering feats of that bygone era—the rock cut temple which was built under Krishna I known as the Kailasanatha temple. In this temple, the architect began work from the top and the sides unlike the structural temples which are built up from the foundation at the ground level. The architect envisaged the plan in minute detail and then cut away the rock piece by piece removing exactly what was not required in his design. The entrance to the *garbha-griha* of the Kailasanatha temple is flanked by large figures, now headless, of the river goddesses *Ganga* and *Yamuna*.

Though the Kailasanatha temple at Ellora is bigger in size but the design is similar to the Kailasanatha temple at Kanchipuram in Tamil Nadu and the Virupaksha temple in Karnataka.



विश्व सांस्कृतिक सम्पदा-भारत

World Cultural Heritage Sites-India

3

8. रामायण का दृश्य, कैलाशनाथ मंदिर, एलोरा, औरंगाबाद, महाराष्ट्र

एलोरा के कैलाशनाथ मंदिर का निर्माण पहाड़ की ढलान पर उत्तरी व दक्षिणी दिशा में दो खाईयों को पाट कर किया गया। पूर्वी दिशा में भी एक खाई पाटी गयी, जो उत्तरी व दक्षिणी खाईयों को उन के पूर्वी किनारे पर जोड़ती है। मंदिर पश्चिमाभिमुखी है। मंदिर के मुख्य प्रवेशद्वार के बायें भाग में तक्षित मूर्तियाँ शैव मत का प्रतिनिधित्व करती हैं तो दायें भाग की मूर्तियाँ वैष्णव मत का।

मंदिर के अग्रभाग व “विमान” के पिछले हिस्से की दीवारों पर भी मूर्तियाँ व डिज़ाइन उत्कीर्ण किए गए हैं। दक्षिण दिशा में मूर्ति शिल्प के एक फलक पर रामायण की कथा को उत्कीर्ण किया गया है, जबकि उत्तरी दिशा में उत्कीर्ण मूर्ति शिल्प के एक फलक पर महाभारत की कथा दर्शायी गई है।

मंदिर में मूर्ति शिल्पों के वर्णनात्मक फलक एक प्रकार से भारतीय पौराणिक एवं दंत कथाओं की दृश्यात्मक जानकारी के विपुल भंडार हैं। प्रस्तुत चित्र में एक विस्तृत फलक पर रामायण की कथा के अंशों को दर्शाया गया है।



8. Relief sculpture, Ramayana, Kailasanatha Temple, Ellora, Aurangabad, Maharashtra

The Kailasanatha temple was constructed by sinking two parallel trenches on the north and south directions of the sloping hill. There is another trench on the eastern side and the temple faces the west. The left side of the main entrance shows dominance of Shaivite sculptures, while the sculptures on the right are mostly Vaishnavite. The front side of the temple and the back of the *Vimana* have carvings on the walls. The sculptural reliefs on the south side show episodes from the *Ramayana* and those on the northern side depict stories from the *Mahabharata*.

The narrative sculptural reliefs in temples are a store-house of visual information on Indian myths and legends. In this picture, one sees a panel showing details of episodes from the *Ramayana*.



विश्व सांस्कृतिक सम्पदा-भारत

World Cultural Heritage Sites-India

3

9. कैलाश पर्वत को हिलाता रावण, एलोरा, औरंगाबाद, महाराष्ट्र

एलोरा का कैलाशनाथ मंदिर स्वयं में एक ऐसा संपूर्ण केन्द्र है, जिसमें मंदिर के द्वार, मुख्य भवन और पवित्रस्थल गर्भ-गृह सहित सभी आवश्यक अंग समाहित हैं। इसी में वे उप पवित्रस्थल भी शामिल हैं, जहां पर चट्टानों पर पौराणिक आकृतियाँ एवं कथाएँ उत्कीर्ण की गई हैं।

यहां एक अत्यंत प्रसिद्ध मूर्ति-शिल्प में बहु-भुजा, बहु-मस्तक वाले राक्षस रावण को कैलाश पर्वत को हिलाते हुए दिखाया गया है। इस मूर्ति-शिल्प के ऊपरी हिस्से में भगवान शिव को पार्वतीजी के साथ बैठा दिखाया गया है। पार्वतीजी भय के मारे भगवान शिव का आश्रय ले रही हैं।

यह मूर्तिशिल्प विश्वास के उस भाव को दर्शाता है कि ईश्वर महान है और बुरी शक्तियों का नाश करता है, चाहे वे कितनी ही शक्तिशाली क्यों न हों। एलोरा स्थित विभिन्न हिन्दू गुफा-मंदिरों में इस मूर्ति शिल्प को कई स्थानों पर उत्कीर्ण किया गया है। कैलाशनाथ मंदिर में यह शिल्प मंडपम् के दक्षिणी हिस्से के द्वारमण्डप के नीचे स्थित है। तीन आयामों में किए गए सूक्ष्म उत्कीर्णन का अपना ही एक नाटकीय प्रभाव पड़ता है।



9. Ravana shaking Mount Kailasa, Ellora, Aurangabad, Maharashtra

The Kailasanatha temple is a complete complex with all the essential elements of a temple including the gateway, main building and the shrine. It also has subsidiary shrines in which mythological figures are carved into the rock.

A very popular sculptural relief here shows the multi-armed, multi-headed demon Ravana shaking the Mount Kailasa. On the upper level of the sculpture, Siva is shown seated with Parvati who is leaning towards him in fear.

The sculpture symbolises an expression of faith in the greatness of Gods who can suppress evil, no matter how strong. The theme of this story is repeated several times at Ellora and in a number of other Hindu cave temples. This relief is located under the porch of the south side of the *mandapam*. The relief has three-dimensional carved details which create an highly dramatic effect.



विश्व सांस्कृतिक सम्पदा-भारत

World Cultural Heritage Sites-India

3

10. बैठे हुए भगवान बुद्ध, गुफा नं. 10, एलोरा, औरंगाबाद, महाराष्ट्र

एलोरा की सभी गुफाएँ, चाहे वे बौद्ध, हिन्दू या जैन धर्म से संबंध रखती हों, स्थापत्य-कला व मूर्तिकला के अद्वितीय उदाहरणों से भरपूर हैं।

गुफा नं. 10 चैत्य गृह है। 'विश्वकर्मा-गुफा' के नाम से भी जानी जाने वाली इस गुफा में तराशी गई कुछ सुंदरतम मूर्तियाँ हैं।

चैत्य-गृह के इस कक्ष में भगवान बुद्ध और उन के दोनों तरफ दर्शाए बोधिसत्व खगोलीय दिव्यों की आराधना में लीन हैं। इस की कमानीदार छत दर्शकों को प्राचीन काष्ठ-वास्तुकला का स्मरण कराती है। स्तंभों के ठीक ऊपर मूर्ति-शिल्प की तीन पंक्तियों पर भगवान बुद्ध से संबंधित फलक दोहराए गए हैं। इस गुफा की तिपतिया खिड़की वास्तुकला का एक अनुपम उदाहरण है; साथ ही, चैत्य-गृह का मनमोहक दृश्य भी दिखलाती है। गुफा के अग्रभाग में तीन ओर शिल्प तक्षित किए गए हैं।



10. Seated Buddha, Cave No. 10, Ellora, Aurangabad, Maharashtra

All the thirty-four caves at Ellora, whether Buddhist, Hindu or Jain, contain exquisite examples of architectural and sculptural work.

Cave No. 10 is a *Chaitya*. Also known as Vishvakarma cave, this cave has some of the most beautiful carved sculptures. In the *chaitya* hall, Lord Buddha is shown seated flanked by bodhisattvas on either side and with adoring celestials above. The ribbed roof reminds the visitor of ancient wooden architecture. The three bands of friezes immediately above the columns show repeated panels of Buddha. The trefoil window of this cave is an imposing architectural feature and offers a beautiful view of the *chaitya*. The facade of the cave has sculptures on three sides.



विश्व सांस्कृतिक सम्पदा-भारत

World Cultural Heritage Sites-India

3

11. मानुषी बुद्ध, गुफा नं. 12, एलोरा, औरंगाबाद, महाराष्ट्र

एलोरा की 34 गुफाओं में से प्रथम 12 गुफाएं बौद्ध धर्म से संबंधित हैं। इन गुफाओं में शिल्पकार मूर्तियां बनाते समय शुद्धता, प्रखरता और शांति का भाव उत्कीर्ण करने में सफल रहा है।

सभी गुफाएँ आकार व बनावट में एक-दूसरे से भिन्न हैं। उदाहरणार्थ, गुफा नं. 6 में कक्ष की पूरी लम्बाई में फैली पत्थरों की दोहरी बेंच, इसकी अपनी एक विशेषता है। तीन ताल के नाम से जानी जाने वाली गुफा नं. 12 चैत्य गृह एवं विहार का मिश्रण है। इसका अग्रभाग सज्जित नहीं है, लेकिन आंतरिक भाग सुंदर मूर्तियों, आदि से सुसज्जित है। गुफा नं. 12 की एक दिलचस्प विशेषता यहां मानुषी बुद्धों की मूर्तियों का होना है। मानवीय शरीर में नश्वर बुद्ध, शाक्यमुनि आदि को मानुषी बुद्धों के रूप में जाना जाता है।

इस चित्र में भगवान बुद्ध तथा मानुषी बुद्धों की मूर्तियाँ दिखाई दे रही हैं।



11. Manushi Buddhas, Cave No. 12, Ellora, Aurangabad, Maharashtra

There are thirty-four caves at Ellora out of which cave Nos. 1 to 12 are Buddhist caves. In these caves, the sculptor has been able to capture the subtlety, refinement and an expression of peace and tranquility in the statue of the Buddha.

These caves differ in size and structure from the others. For example, a double row of stone benches extending almost the full length of the hall is a key feature in the Cave No. 6. Cave No. 12 also known as Teen Tala is a combination of the *chaitya* and the *vihara*. Its facade does not have any decoration whereas the interiors are full of free standing and relief sculptures. An interesting feature in this cave is the presence of the mortal Buddhas, in human form, such as Sakyamuni known as Manushi Buddhas.

This picture shows a sculpture of the Buddha and a row of Manushi Buddhas.



विश्व सांस्कृतिक सम्पदा-भारत

World Cultural Heritage Sites-India

3

12. बाह्य-दृश्य, गुफा नं. 32, एलोरा, औरंगाबाद, महाराष्ट्र

एलोरा में जैन गुफाएँ अन्य गुफाओं से कुछ दूरी पर स्थित हैं। कुल 34 गुफाओं में केवल पांच गुफाएँ (नं. 30 से 35 तक) जैन गुफाएँ हैं। इन में से केवल तीन गुफाएँ प्रचुर मात्रा में सूक्ष्म रूप से उत्कीर्ण शिल्प एवं चमकीलेपन के कारण महत्वपूर्ण मानी जाती हैं।

इंद्रसभा के नाम से प्रसिद्ध गुफा नं. 32 सभी जैन गुफाओं में हर प्रकार से सुंदर व सबसे अलंकृत मानी जाती है।

एलोरा के कैलाशनाथ मंदिर की भाँति इस गुफा-मंदिर का विमान द्रविड़ शैली की विशेषता रखता है। स्तंभ, प्रतीक अभिषिक्त होते हुए धरातल में असमान रूप से आयताकार हैं। पवित्रस्थल भी कैलाशनाथ मंदिर (गुफा नं. 16) की भाँति ऊँचे चबूतरे पर स्थित हैं। यहाँ सुंदर ढंग से उत्कीर्ण कमल का फूल आकर्षित करता है।



12. Exterior view, Cave No. 32, Ellora, Aurangabad, Maharashtra

The Jaina group of caves at Ellora are situated at a distance from the other caves. Out of a total of thirty-four caves in the complex there are five Jaina caves from Cave No. 30 to 34. Three caves are considered significant because of their richly carved details and polished finish.

Cave No. 32, popularly known as *Indra Sabha* is the finest and most elaborate in all respects of the Jaina group of caves at Ellora.

Its monolithic tower or *Vimana* suggests the features of the Dravidian style, similar to that of Kailasanatha. The pillar is an emblem crowned and is an irregular rectangular at the base. The shrine is also made on high platform like Kailasanatha Temple (Cave No. 16). An interesting carving is a beautiful lotus on the shrine.



विश्व सांस्कृतिक सम्पदा-भारत

World Cultural Heritage Sites-India

3

13. बाहुबली गुफा नं. 32, एलोरा, औरंगाबाद, महाराष्ट्र

इंद्रसभा नाम से प्रसिद्ध गुफा नं. 32 एलोरा की सुंदरतम जैन गुफाओं में से एक है। प्रांगण में स्थित प्रवेश द्वार इस के भूतल में प्रविष्टि करवाता है।

भूतल के पवित्र पूजा स्थान में भगवान वर्धमान महावीर की प्रतिमा है। पहली मंजिल पर सूक्ष्म रूप से तक्षित प्रतिमाएं, सुसज्जित स्तंभ और चित्रित छत है। इस तल के पवित्र पूजा स्थान में भी बैठे हुए भगवान महावीर की प्रतिमा है।

पवित्र पूजा स्थल की पिछली दीवार पर दो महत्वपूर्ण जैन आकृतियाँ हैं। बाईं तरफ पार्श्वनाथ की विशाल आकृति है तो दाईं तरफ बाहुबली की प्रसिद्ध आकृति। बाहुबली पूर्णतः खिले कमल के फूल पर खड़े दर्शाए गए हैं, मानो किसी प्रण को पूरा करने की मुद्रा में हों।

बाहुबली के चारों तरफ उग आयी घनी वनस्पति, उनकी बहनें, माला लिए खड़ी दिव्य आकृतियाँ, जंगली जानवर, हिरण, सर्प व बिच्छू आदि भी दर्शाए गए हैं। गुफा मंदिर की दीवारों पर, जैन धर्म की अनेक पौराणिक कथाएं, जैसे कि कामथ का आक्रमण, पार्श्वनाथ का राज्याभिषेक आदि भी तक्षित हैं।

एलोरा की जैन गुफाओं में स्थित मंदिरों को जैन धर्म के 24 तीर्थंकरों की प्रतिमाओं से भी सजाया गया है।



13. Bahubali, Cave No. 32, Ellora, Aurangabad, Maharashtra

The Cave No. 32, popularly known as *Indra Sabha* is the most beautiful of the Jaina caves at Ellora. The ground floor has a doorway leading to the courtyard.

The shrine on the ground floor contains the figure of *Vardhamana* Mahavira. The first floor has richly carved sculptures, highly decorated pillars and painted ceiling. The shrine on the first floor also has the seated figure of the Mahavira.

The back wall of the shrine has two important Jaina figures. The left of the shrine has a huge figure of Parsvanatha and on the right, the famous figure of Bahubali. Bahubali is shown standing on a full bloom lotus as if to fulfill a vow. He is surrounded by a thick growth of vegetation, his sisters, celestial figures holding garlands, wild animals, deer, serpents and scorpions. Many stories from Jain mythology such as Kamatha's attack, adoration of Parsvanatha have been carved on the walls of the cave.

In the Jaina caves at Ellora, twenty-four saints of Jainism known as *Tirthankaras* are found adorning the Jaina caves.



विश्व सांस्कृतिक सम्पदा-भारत

World Cultural Heritage Sites-India

3

14. बाह्य-दृश्य, एलिफेंटा गुफाएं, एलिफेंटा, महाराष्ट्र

एलिफेंटा की गुफाएँ अपने आकार, बनावट, मूर्तिकला एवं वास्तुकला की कल्पना को ले कर दक्षिणी एशिया में शिलाखंड तराशने की वास्तुकला में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। यह गुफाएँ एलिफेंटा द्वीप के पश्चिम पहाड़ को तराश कर जल स्तर से 250 फीट ऊपर बनाई गई हैं।

इसके स्तंभ व शिल्प विशाल हैं और वास्तुकला सम्बन्धी प्रारूप खुलेपन का आभास देता है। स्तंभों को आकर्षक आकार दिया गया है और स्तंभों के ऊपरी हिस्सों की सजावटें अजंता की गुफाओं में भी देखी जा सकती हैं।

इस क्षेत्र की गुफा-कला एवं वास्तुकला का अध्ययन करने पर पता चलता है कि पश्चिमी भारत के बाघ, अजंता, एलोरा व एलिफेंटा के गुफा मंदिरों में दरवाजों की चौखट, स्तंभों के प्रारूपों में कुछ समानताएँ हैं।



14. Exterior view, Elephanta Caves, Elephanta Island, Maharashtra

The Elephanta caves rank among the most impressive of South Asian rock cut architecture because of its size, scale, sculptural and architectural conception. It has been carved out of the western hill of the island at an elevation of more than 250 feet above the high water level. It is hewn out of the hard compact rock trap.

The pillars and relief sculptures are gigantic in scale and the architectural design gives the feeling of openness. The pillars are beautifully shaped and have bulbous cushion capitals (*amla*) which can also be seen at the Ajanta caves.

While studying cave art and architecture, one finds common features in cave temples of western India at Bagh, Ajanta, Ellora and Elephanta, such as door frames, designs of pillars etc.



विश्व सांस्कृतिक सम्पदा-भारत

World Cultural Heritage Sites-India

3

15. शिव-गुफा, एलिफेंटा, महाराष्ट्र

एलिफेंटा-गुफा का मुख्य प्रवेशद्वार उत्तराभिमुखी है, जबकि धार्मिक मान्यताओं के अनुसार हिंदू-मंदिर प्रायः पूर्वाभिमुखी होते हैं। गुफा पूर्व एवं पश्चिम दिशाओं में भी तराशी गई है, जो प्रवेश की सुविधा प्रदान करती है। इस के आंतरिक भाग में मूर्तियों से उत्कीर्ण लगभग 10 फलक भगवान शिव से जुड़ी दंतकथाओं को दर्शाते हैं। मुख्य पवित्रस्थल लगभग 130 फीट चौड़ा है तथा स्तंभों की छः कतारें हैं और हर पक्ति में छः स्तंभ हैं।

मुख्य शिव-गुफा के केन्द्रीय कक्ष में एक छोटा-सा चौकोर मंदिर हैं, जिसमें शिवलिंग स्थापित है। इस के द्वारों पर द्वारपाल उत्कीर्ण किए गए हैं। पुर्तगाली सेना द्वारा द्वीप पर कब्जा करने की कार्यवाही के दौरान उन के द्वारा की गई गोलाबारी से इन मूर्तियों को क्षति पहुंची। पवित्रस्थल के चारों तरफ का खाली स्थान परिक्रमा करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है।



15. Shrine in Siva Cave, Elephanta Island, Maharashtra

The main entrance to the Elephanta Cave faces north, although according to religious norms, the Hindu temple usually faces the east. The cave has also been cut away on either side, leaving open areas which offer entry from the east and west sides also. The interior of the cave has about ten sculptural panels of legends associated with Siva. The main shrine is 130 feet wide which has six rows of columns and each row again having six columns.

There is also a small square temple inside the central hall for the *Linga*. Its doors are flanked by large *dwarapalas*. The *dwarapalas* were damaged when the Portuguese army, in the process of occupying the island, fired cannon balls. The open space surrounding the shrine is used as a circumambulatory passage.



विश्व सांस्कृतिक सम्पदा-भारत

World Cultural Heritage Sites-India

3

16. नटराज, एलिफेंटा, महाराष्ट्र

चित्र में यह एक क्षतिग्रस्त बड़ी मूर्ति का अंश दिखाया गया है।

एलिफेंटा की गुफाओं की वास्तुसंकल्पना भगवान शिव की पवित्र उपस्थिति का भान कराती है। प्रवेश करने पर पहला फलक नृत्य के देवता नटराज का है और दूसरा शिव को ही ध्यान-मुद्रा में दर्शाता है। ये प्रतिमाएँ विशाल एवं भव्य हैं। नटराज की आठ भुजाओं में से केवल दो भुजाएँ-फरसा व सर्प लिए-दृष्टिगोचर हैं।

इसी तक्षित शिल्प फलक में भगवान गणेश एवं भृंगी ऋषि, जिन्होंने भगवान शिव के साथ नृत्य किया, दर्शाए गए हैं। ब्रह्मा, विष्णु तथा इंद्र के साथ-साथ अन्य देवी-देवता भी प्रदर्शित किए गए हैं।



16. Nataraja, detail Elephanta Island, Maharashtra

As you can see, the sculpture shown in this picture is damaged. It is a detail of a large sculptural relief.

The architectural conception at Elephanta invokes the divine presence of Siva. On entering, the first panel is of *Nataraja*, the Lord of Dance and the second shows Siva in meditation. These sculptures are huge and very impressive. The *Nataraja* has eight arms of which two can be seen in this picture holding the axe and the snake.

In the same sculptural relief, Lord Ganesha, and the sage Bhringi, who dances with Siva, can be seen at the site. Apart from Brahma, Vishnu and Indra, other divine figures have also been depicted in the panel.



विश्व सांस्कृतिक सम्पदा-भारत

World Cultural Heritage Sites-India

3

17. त्रिमूर्ति, एलिफेंटा, महाराष्ट्र

इस चित्र में जो मूर्ति दिखाई दे रही है, वह अपने स्थान, आकार और अपने अर्थ के कारण एलिफेंटा की समस्त मूर्तियों में अपना एक विशेष महत्व रखती है। इसे सदाशिव, महेश्वर या महेशमूर्ति भी कहा जाता है। यह तीन मुखों वाली मूर्ति भगवान शिव के विभिन्न रूपों को दर्शाती है। बाईं तरफ की मूर्ति में उनके नेत्र खुले हैं एवं उनकी मूर्छें दर्शायी गयी हैं। यह उनका भैरव-रूप है। मध्य की मूर्ति में वे भव्य, सौम्यता लिए हुए शांति का प्रसार-सा कर रहे हैं। दायीं तरफ नारी का रूप है। इस त्रिमूर्ति से जगत में व्याप्त त्रिगुणों क्रमशः तमोगुण, सतगुण व रजोगुण का अर्थ भी लिया जाता है। कुछ विद्वानों का यह भी मत है कि यद्यपि मूर्ति में तीन मुख ही हैं, पर मूर्तिकार चौथा, यहाँ तक कि पांचवां मुख भी बना सकते थे।



17. Trimurti, Elephanta Island, Maharashtra

Considering the placement, size and its interpretation, the sculpture which is seen in this picture is, by far the most magnificent sculpture of all the images at Elephanta. It is also referred to as *Sadashiva*, *Maheshwara* or *Maheshamurti*. This three-headed figure shows different manifestations of the Lord Siva, on the left he is seen with fully open eyes and is wearing a moustache, this is his Bhairava aspect. In the centre, you can see Siva in his benign form emanating peace and tranquility; and on the right, the feminine Parvati. This Trimurti sculpture is interpreted as the three fundamental qualities present in the Universe—the *Tamas*, the *Satva* and the *Rajas* respectively. Some scholars are of the view that although only three faces are shown in the sculpture, the fourth and even a fifth might have been envisaged by the sculptors.



विश्व सांस्कृतिक सम्पदा-भारत

World Cultural Heritage Sites-India

3

18. सी कैथेड्रल, गोआ

गोआ में पुर्तगाली शासकों के साथ ही उनके ईसाई धर्म के पुजारी भी आए। वे यह मानते थे कि ईसाई धर्म के ज्ञान का विस्तार और आम जनता को ईसाई धर्म के बारे में शिक्षित करना उनका कर्तव्य है। इसी कारण गोआ में अनेक छोटे-बड़े, नए-पुराने चर्च हैं।

गोआ में “सी कैथेड्रल” या संत कैथरिन कैथेड्रल, वहाँ का सबसे बड़ा चर्च है। यह चर्च चूने के पलस्तर से ढके लेटराइट से बने ऊँचे स्थान पर निर्मित है। कैथेड्रल का मुख्य प्रवेशद्वार पूर्वाभिमुखी है। सी कैथेड्रल की वास्तुरचना पुर्तगाली गॉथिक शैली में होते हुए, इसका बाह्य भाग तुस्कनी, जबकि अंदरूनी भाग कोरिन्थियन शैली के स्तंभों से युक्त है।

ऑर्गन दीर्घा में दो धातु-पट्टों पर लातिनी एवं पुर्तगाली भाषा में खुदे एक लेख में बताया गया है कि कैथेड्रल के मुख्य भवन का निर्माण 1562 ईस्वी में प्रारंभ हुआ। सी कैथेड्रल वास्तु-संरचना-योजना में आयताकार है पर आंतरिक रूप से स्वस्तिकाकार।

यह बहुत बड़ा और भव्य कैथेड्रल अपने समय का एक महान स्मारक है।



18. Sé Cathedral, Goa

With the coming of the Portuguese rulers, there came to Goa the priests of their religion. Christians believed it was their duty to spread the knowledge of their religion and also to educate people. There are scores of churches, big and small, ancient and new all over Goa.

The Sé Cathedral or Cathedral of St. Catherine is the largest of the churches in Old Goa. The Cathedral is built on a raised plinth of laterite covered over with lime plaster. The main entrance faces east. Architecturally, in Portuguese Gothic style, the exterior of the building is Tuscan and the interior Corinthian. A Latin inscription on a pediment in the Cathedral records that the construction of the main building started in 1562 A.D. The building is oblong in plan but has a cruciform layout in the interior.

The massive and imposing Sé Cathedral is one of the finest monuments of its period.



विश्व सांस्कृतिक सम्पदा-भारत

World Cultural Heritage Sites-India

3

19. प्रार्थनालय, सी कैथेड्रल, गोआ

सन् 1510 में पुर्तगाली गोआ के समुद्री तट पर पहुँचे और धीरे-धीरे उन्होंने वहाँ की धरती और तट के समानान्तर स्थानों पर आधिपत्य जमाना शुरू किया। वे भारत में अपने साथ यूरोप के पुनर्जागरण काल की स्थापत्य कला भी लाए एवं उन्होंने भव्य चर्चों और भवनों का निर्माण करवाया। कूसारोपण के चित्रण के द्वारा मानवीय पीड़ाओं को मुखरित करना भारतीय कलाकारों के लिए एक कठिन चुनौती थी।

प्रस्तुत चित्र में आप चर्च के प्रमुख प्रार्थनालय का एक महत्वपूर्ण हिस्सा देख रहे हैं। यह चर्च सिन्दरिया की संत कैथरीन को समर्पित है। इस के फलक पर प्रचुर मुलम्मा चढ़ा है तथा यह दूसरों के पापों के लिए संत के आत्म-बलिदान को दर्शाता है।

इस 'सी कैथेड्रल' का निर्माण सन् 1562 में प्रारंभ हुआ तथा इसके पूरा होने में 75 वर्ष लगे। प्रार्थनालय सन् 1652 में तैयार हो गया था। गोआ के चर्चों एवं कॉन्वेंटों में जिन मूर्तियों का संग्रह है, वे अधिकांशतः महीन रूप से नक्काशी की हुई लकड़ी पर बनायी गयी हैं।



19. Altar, Se Cathedral, Goa

In 1510 A.D., the Portuguese landed on the shores of Goa. They settled and extended their rule inland and along the coast. The Portuguese brought to India the art, architecture of the European Renaissance period and constructed beautiful churches and buildings.

The depiction of the Crucifixion to express human pain and suffering was a challenge to Indian artists. In this picture, one sees the main altar which is dedicated to St. Catherine of Alexandria. The panel is richly gilded and shows the martyrdom of the Saint who, in all humility died for the sins of others.

The construction of the Cathedral was started in 1562 A.D. and took around seventy-five years to complete. The altars were completed in 1652 A.D. Most of the sculptures in churches and convents of Goa are carved delicately in wood.



विश्व सांस्कृतिक सम्पदा-भारत World Cultural Heritage Sites-India

3

20. फलक, सी कैथेड्रल, गोआ

17वीं शताब्दी में, जबकि अंग्रेज़ पुर्तगालियों के हाथों से गोआ का अधिकार लेने के लिए प्रयासरत थे; उस समय भी गोवन-आंग्ल कला का निरन्तर विकास होता रहा और इस तथ्य को भी बहुत कम लोग जानते हैं कि गोआ की स्थापत्य-कला को उन भारतीय कारीगरों ने ही साकार किया था, जो विदेशी कारीगरों एवं वास्तुविदों के साथ काम किया करते थे।

गोआ का 'सी कैथेड्रल' ही एकमात्र ऐसा चर्च है, जिस पर भारतीय स्थापत्य-कला का प्रभाव नहीं पड़ा।

'सी कैथेड्रल' के प्रार्थनालय का रिटेबल भारत के श्रेष्ठ प्रार्थनालयों के हिस्सों में से एक है। इसे सुंदर ढंग से उत्कीर्ण किया गया है तथा मुलम्मा चढ़ा कर अलंकृत किया गया है। इस पर अंकित दृश्यों में प्रचारकों की आकृतियां, स्तंभ एवं सजावटी प्रतीक हैं। इस रिटेबल में तीन स्तर हैं तथा हर स्तर पर तीन दृश्य। यहाँ ईसा तथा उसके प्रचारकों की आकृति को उकेरा गया है तथा संत कैथरिन के जीवन की घटनाओं के दृश्य दिखाए गए हैं। इस चर्च का नामकरण सेंट कैथरिन के नाम पर ही किया गया था। इस प्रकार देवालय में श्रद्धालुओं को पवित्र आत्मा की अभिव्यक्ति का अनुभव होता है।



20. Retable, detail, Se Cathedral, Goa

It is interesting to note that Goan-Christian art flourished in the 17th century at a time when the British were in the process of taking over Goa from the Portuguese. It is a lesser known fact that the art and architecture of Goa was mostly executed by Indian artisans who were learning about Christian art by working with foreign master craftsmen and architects.

The Sé Cathedral is the first Church built in Goa in which one does not find any influence of Indian architecture.

The retable of the main altar of the Sé Cathedral is one of the best altar pieces in India. It is exquisitely carved, gilt and ornamented with scenes showing figures of apostles, pillars and decorative motifs. The retable is three-storeyed with three scenes in each storey. There is a bas-relief of Jesus with his apostles and there are scenes depicting episodes from the life of St. Catherine after whom the Cathedral is named. So, in the House of the "Body of God", the soul of the worshipper finds the manifestations of the Holy Spirit.



विश्व सांस्कृतिक सम्पदा-भारत

World Cultural Heritage Sites-India

3

21. बसिलिका, बों जेजुश, गोआ

ईसाई समुदाय के लिए चर्च देव गृह एवं पूजा स्थल है।

‘बों जेजुश बसिलिका’ भी स्थानीय रूप से उपलब्ध लाल रंग में रंगे हुए लेटराइट पत्थरों से निर्मित है। काफी पहले इसके अग्रभाग को छोड़कर सारे बाह्य भाग पर चूने का पलस्तर किया गया था, पर कालांतर में यह पलस्तर हटा दिया गया। बसिलिका की छत मूलतः खपरैलों की बनी हुई है। यह अपनी वास्तु-संरचना योजना में कूसाकार है।

जैसा कि, चित्र में दृष्टिगोचर है—बसिलिका का अग्रभाग तीन मंजिला है। यह पश्चिमाभिमुखी है तथा आयोनिक, डोरिक तथा कोर भित्ति स्तंभों से सुशोभित है। मुख्य प्रवेश द्वार के अगल-बगल में दो और छोटे प्रवेश द्वार हैं। इसके अग्रभाग के शीर्ष पर, जीसस शब्द के यूनानी भाषा के लातिनी में लिखे गए, प्रथम तीन अक्षर आई.एच.एस. उकेरे गए हैं।

बसिलिका के दक्षिणी भाग में उस से सटा एक, एक मंजिला भवन बसिलिका को “प्रॉफेस्ड हाऊस” से जोड़ता है। बों जेजुश बसिलिका की मुख्य वेदिका बों जेजुश अर्थात् “अच्छे जीजस” या “शिशु जीसस” को समर्पित है और यूरोपीय अत्यलंकृत बैरोक शैली में बनाई गई है। अन्य चर्चों की भांति इस बसिलिका में भी एक मुख्य वेदिका तथा बगल की वेदिकाएं हैं, जहाँ प्रार्थना की जाती है।

यहाँ पर संत फ्रांसिस जेवियर का पार्थिव शरीर चांदी की शवपेटिका में रखा है। सदियां बीत जाने पर भी यह विकृत नहीं हुआ है। विश्वभर से लाखों यात्री यहाँ पूजा करने आते हैं। और इस चमत्कार के सम्मुख श्रद्धावश झुक जाते हैं।



21. Basilica of Bom Jesus, Goa

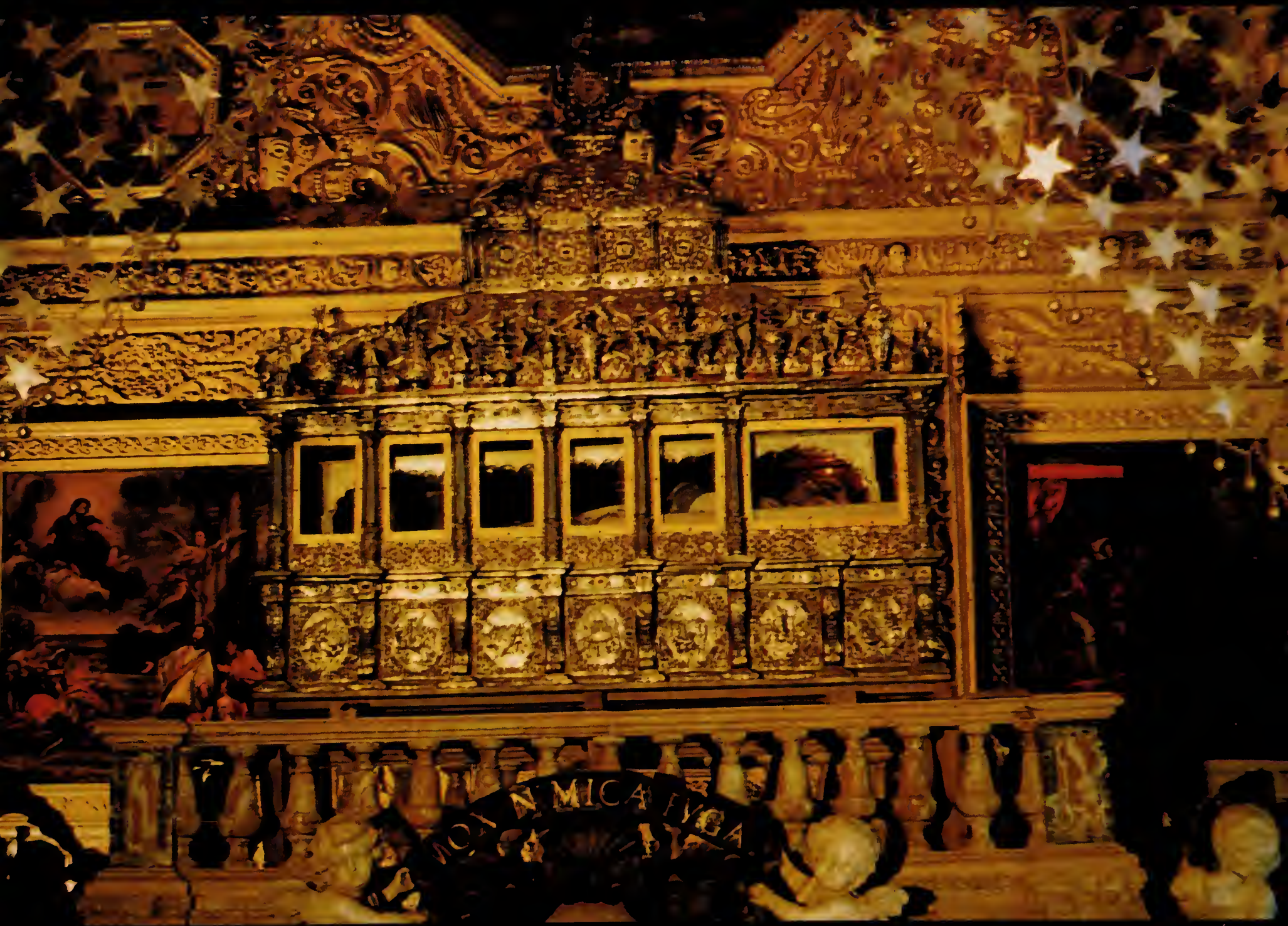
The Church is the house of God and place of worship for the Christian community. The Basilica of Bom Jesus is also built out of blocks of the locally available red tinted laterite stone. Its exterior, excepting the facade which was once lime plastered was subsequently removed. The roof of the Basilica was originally tiled. The Basilica is cruciform on plan.

As seen in the picture, the Basilica has a three storeyed facade. It faces west and shows Ionic, Doric and Corinthian orders. The main entrance is flanked by two smaller entrances. The first three letters of Jesus in Greek ‘IHS’ have been carved on its facade.

A single storeyed structure adjacent to the Church on its southern wing connects it with the Professed House.

The Basilica is called ‘Bom Jesus’ meaning ‘God Jesus’ or ‘Infant Jesus’ to whom it is dedicated. In this church like other churches, there is a main altar and side altars where prayers are offered.

The mortal remains of Saint Francis Xavier, are kept in a silver casket in this Basilica. Through the centuries, the body of the great saint has not decomposed. Christians from all over the world come to worship and offer prayers and bow down in reverence before this miracle.



विश्व सांस्कृतिक सम्पदा-भारत

World Cultural Heritage Sites-India

3

22. संत फ्रांसिस जेवियर का पार्थिव शरीर, बसिलिका, बों जेजुश, गोआ

संत फ्रांसिस जेवियर का जन्म 7 अप्रैल, 1506 को हुआ था तथा सन् 1530 में उन्हें पुरोहिताई प्राप्त हुई। तत्पश्चात् उन्होंने अध्यापन कार्य शुरू किया और शीघ्र ही रीजेंट के पद पर आसीन हुए। अपने जीवन का अधिकांश समय उन्होंने दीन-दुखियों की सेवा-सुश्रूषा तथा विश्व के विभिन्न हिस्सों में शिक्षा एवं सत्य के प्रसार में लगाया। वे जेसुइट्स के संस्थापक इनिगो द लॉयेला के शिष्य थे तथा उन्होंने विश्वभर में लॉयेला शैक्षणिक संस्थानों की एक कड़ी को शुरू किया। 46 वर्ष की अवस्था में सितंबर 1552 को उनका देहावसान हुआ तथा पोप ने 1662 में उन्हें गोआ में संत घोषित किया।

उनकी पार्थिव देह, बसिलिका, बों जेजुश के प्रार्थनालय में रखी है। प्रार्थनालय का आंतरिक भाग प्रचुर रूप से रत्नजडित है। चांदी की शवपेटिका, जिस में संत फ्रांसिस जेवियर का पार्थिव-शरीर रखा है, वास्तव में इतालवी व भारतीय कला का सुंदर नमूना है। यह बेहतरीन ढंग से उत्कीर्ण है तथा कभी इसमें रत्न जड़े थे। इसकी हर तरफ 7 फलकों में विभाजित है तथा ऊपर पवित्र क्रॉस है। हर दस वर्ष के बाद उनकी बरसी पर उनका पार्थिव शरीर आम जनता के दर्शनार्थ रखा जाता है।



22. Holy Relics of St. Francis Xavier, Basilica of Bom Jesus, Goa

St. Francis Xavier was born on April 7, 1506. In 1530 A.D., he received the Priesthood. He started teaching and soon rose to the position of a Regent. He spent most of his life nursing the sick and spreading the gospel of truth in different parts of the world. He was a student of Inigo de Loyola, founder of the Jesuits and started a chain of Loyola educational institutes all over the world. He died in September 1552 at the age of forty-six and was declared Saint by the Pope in 1662 A.D. in Goa.

The sacred body of St. Francis Xavier is kept in the Chapel of Basilica of the Bom Jesus, the interior of which is richly ornamented.

The silver casket, a fine example of Italian and Indian art is a reliquary containing the sacred body of St. Francis Xavier. The Casket is exquisitely carved and was once studded with precious stones. It is divided into seven panels on each side and there is a cross on top. Every ten years, on the anniversary of the Saint's death, the holy relics of the body of St. Francis Xavier are displayed to the public.



विश्व सांस्कृतिक सम्पदा-भारत World Cultural Heritage Sites-India

3

23. संत फ्रांसिस असीसी का चर्च, गोआ

संत फ्रांसिस असीसी के कोनवन्ट और चर्च आर्चबिशप के भूतपूर्व महल के मार्फत सी कैथेड्रल से जुड़े हैं। चर्च की इमारत लेटराइट पत्थर से बनी है और उस पर चूने का पलस्तर किया गया है। चर्च पश्चिमाभिमुखी है। चर्च में प्रवेश करने के बाद दोनों तरफ तीन-तीन प्रार्थनालय, वृंदगान के लिए स्थान, दो वेदिकाएं एवं एक मुख्य वेदिका है।

चर्च की इमारत से जुड़े कोन्वेंट में एक पुरातात्विक संग्राहलय है। चर्च की मुख्य वेदिका के मंडप के ऊपर यूरोपीय अत्यलंकृत बैरोक शैली में संत फ्रांसिस असीसी की दो बड़ी मूर्तियाँ तथा सूली पर ईसा मसीह की मूर्ति बनायी गई है। इन मूर्तियों के नीचे संत फ्रांसिस असीसी की तीन शपथ-निर्धनता, नम्रता तथा आज्ञाकारिता अंकित हैं।



23. The Church of St. Francis of Assisi, Goa

The Convent and Church of St. Francis of Assisi is connected to the Sé Cathedral through the former palace of the Archbishop. The building is built of laterite blocks and is lime-plastered. The Church faces west and the nave has three chapels on either side, a choir, two altars in the transept and a main altar. The Convent, an annexe to the church, houses the Archaeological Museum.

The main altar of the Church is in Baroque style with Corinthian features. In the main altar, above the tabernacle, are two large statues of St. Francis of Assisi and Jesus on the Cross. The three vows of the Saint—poverty, humility and obedience have been inscribed beneath the two figures.



विश्व सांस्कृतिक सम्पदा-भारत

World Cultural Heritage Sites-India

3

24. संत केजेतान का चर्च, गोआ

भारत में पुर्तगालियों द्वारा उनके पूर्वी साम्राज्य की राजधानी-गोआ में भव्य चर्च निर्मित किए गए थे।

संत केजेतान का विशाल तथा सुंदर चर्च सी कैथेड्रल की दूसरी तरफ स्थित है। यह चर्च भी लेटराइट पत्थर का बना है तथा इस पर भी चूने का पलस्तर किया गया है। चर्च की मुख्य वेदिका अवॉर लेडी ऑफ डिवाइन प्रोविडेंस को समर्पित है। यहाँ यूरोपीय अत्यलंकृत बैरोक शैली में छः और वेदिकाएँ हैं जिन पर स्वर्ण का मुलम्मा चढ़ा है तथा इन वेदिकाओं पर मुख्य रूप से देवदूतों की आकृतियाँ हैं। इन पर संत केजेतान के जीवन को दर्शाने वाले दृश्य भी चित्रित किए गए हैं।

17वीं शताब्दी में निर्मित इस चर्च को रोम के संत पीटर चर्च के मूल डिजाइन के आधार पर बनाया गया है।



24. The Church of St. Cajetan, Goa

The greatest churches of the Portuguese in India were built in Goa, the capital of their eastern dominions.

This large and beautiful church of St. Cajetan is standing opposite to the Sé Cathedral. The church is built of lime-plastered laterite blocks. The main altar of the church is dedicated to Our Lady of Divine Providence. There are six other altars which are profusely carved and gilt in Baroque style with twisted shafts and figures of angels dominating in each. There are scenes, painted on canvas depicting the life of St. Cajetan in the altar.

The Church was built in the 17th century and is modelled on the original design of St. Peter's Church in Rome.

